RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

वर्ष : 12	अंक : 9	मुम्बई, दिसम्बर 2022	पृष्ठ : 36	मूल्य : 25	हिन्दी
VOLUME : 12	ISSUE : 9	MUMBAI, DECEMBER 2022	PAGES : 36	PRICE : 25	English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2549

नवप्रतिष्ठित 24 वें तीर्थंकर भगवान श्री 1008 महावीर स्वामी का महामस्तकाभिषेक
श्री महावीर जी क्षेत्र, 27 नवम्बर 2022 से 4 दिसम्बर 2022 तक संपन्न

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 12 अंक 9 दिसम्बर 2022

श्री शिखरचन्द पहाड़िया
अध्यक्ष

श्री प्रदीप जैन (पी.एन.सी.)
उपाध्यक्ष

श्री वसंतलाल दोशी
उपाध्यक्ष

श्री नीलम अजमेरा
उपाध्यक्ष

श्री गजराज गंगवाल
उपाध्यक्ष

श्री तरुण काला
उपाध्यक्ष

श्री संतोष जैन (पेंढारी)
महामंत्री

श्री के.सी. जैन(काला)
कोषाध्यक्ष

श्री खुशाल जैन (सी.ए.)
मंत्री

श्री विनोद कोयलावाले
मंत्री

श्री जयकुमार जैन (कोटावाले)
मंत्री

प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) अनुपम जैन, इन्दौर
सम्पादक
उमानाथ रामअजोर दुबे
सम्पादकीय सलाहकार
डॉ. अनेकान्त जैन, दिल्ली
श्री सुरेश जैन (IAS), भोपाल
श्री वसंतशास्त्री, चेन्नई
श्री धरमचंद शास्त्री, दिल्ली
श्री राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर
पं. (डॉ.) महावीर शास्त्री, सोलापुर
श्री प्रकाश पापड़ीवाल, औरंगाबाद

इस अंक में

तपस्वी सम्राट, महातपो-मार्तण्ड, 108 आचार्यश्री सन्मतिसागरजी गुरुदेव 6

आचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज 7

काशी की जैन विद्वत् परम्परा 8

तमिलनाडु और वहां की प्राचीनता 12

भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल का दौरा 17

करीमनगर में जैन धर्म 18

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।

2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।

3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।
किसी भी विवाद का निराकरण मुंबई न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में होगा

कार्यालय: भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुम्बई-400004
फोन : 022-23878293 / 022-2385 9370
website : www.tirthkshetracommittee.com, e-mail : tirthvandana4@gmail.com

मूल्य
वार्षिक : 300 रुपये
त्रिवार्षिक : 800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष) : 2500 रुपये

बंधुओं,

सादर जय जिनेन्द्र,

जैसा की सर्वविदित है कि आज सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज अपने सम्मेदशिखर जी तीर्थ की रक्षा और पवित्रता के लिए सड़कों पर है। समाज की शीर्षस्थ संस्थाएं भी सम्मेदशिखर जी तीर्थ के लिए आगे आकर कार्य कर रही हैं। हमने भी भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से केन्द्र एवं राज्य सरकार से सम्पूर्ण जैन समाज की मांग रखी जिसमें तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर जी को पर्यटन स्थल या वन्य अभयारण्य केंद्र नहीं बल्कि **पवित्र जैन तीर्थ** घोषित करने की मांग की है।

भारत सरकार के पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा अगस्त २०१९ में आधिसूचना जारी की गयी थी जिसमें पारसनाथ पहाड़ को पारसनाथ वन्यजीव अभयारण्य का उल्लेख है तथा उसमें यह भी उल्लेख किया गया था कि इसी पहाड़ पर एक भाग को जैनों का पवित्र तीर्थ धाम भी माना जाता है। हमें इस बात से बहुत खेद हुआ कि श्री सम्मेदशिखर जी जहाँ का कण-कण पवित्र और पावन है, जो शाश्वत है, जिसे जैन धर्म का अस्तित्व कहा जाता है उस पर्वत का मात्र एक भाग जैनों का ? वो भी माना जाता है, सरकार के इस सूचना पत्र से हमें एवं हमारी समग्र जैन समाज की भावनाओं को ठेस पहुंची है।

आज विभिन्न-विभिन्न प्रान्तों में, शहरों में, नगरों एवं गाँवों में समाज, ट्रस्ट एवं प्रमुख गणमान्य तीर्थराज सम्मेदशिखरजी के लिए सरकार से लड़ाई लड़ रहे हैं जो हमारी जैन एकता और शिखरजी के प्रति आस्था को दर्शाता है।

समाज की शीर्ष संस्थाओं के साथ समाज द्वारा दिल्ली में गत दिनों से मुनि श्री विहर्ष सागर जी महाराज के पावन सानिध्य में श्री सम्मेदशिखर तीर्थ बचाओं आन्दोलन चल रहा है जिसमें हजारों की संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित हैं।

भारत सरकार से जारी सूचना पत्र से हुए विवाद से सम्बंधित जैन धर्म के सर्वोच्च तीर्थ की पावनता और पवित्रता को बरकरार रखने के उद्देश्य से सरकार से हमने अनेकों माध्यमों से बात-चीत करने के प्रयास किये हैं हाल ही में हम सब ने मिलकर भारत की लोकसभा के स्पीकर सम्मान्नीय श्री ओम बिरलाजी से समग्र जैन समाज के प्रतिनिधि मंडल के रूप में एक आमने-सामने बैठक के लिए समय मांगा जिसे स्पीकर महोदय ने सहज स्वीकार करते हुए दिनांक १६ दिसम्बर २०२२ को दोपहर का समय हम सब को दिया था।

तत्पश्चात १६ दिसम्बर को संसद भवन, दिल्ली में करीब २ घंटे चली इस बैठक में हमने सम्मेदशिखर जी तीर्थ की पवित्रता, महत्ता, और वहां की स्थिति से माननीय बिरला जी को अवगत कराया और भारत सरकार एवं झारखण्ड सरकार द्वारा जारी सूचना पत्रों के बारे में विस्तार से बताया। स्पीकर महोदय ने हम सभी की बातें गंभीरता से सुनी और हम सब को आश्वस्त भी किया। स्पीकर महोदय ने हमें इस विषय में आगे की कार्यवाही करने के लिए भी मार्गदर्शन दिया जिससे भारत सरकार एवं झारखण्ड सरकार के द्वारा जारी सूचना पत्र एवं जहाँ जहाँ जैन समाज को आपत्ति है उन सब में समाज के पक्ष में निर्णय लिया जा सके।

सभापति महोदय से बात-चीत के पश्चात हमने झारखण्ड के मुख्यमंत्री माननीय हेमंत सोरेन से एक बैठक की योजना बनाई है जिसके लिए हमारी तैयारी है।

इसके अतिरिक्त बाहरी रूप से भी जैन समाज के द्वारा अनेकों आन्दोलन देशभर में आयोजित किये जा रहे हैं तथा समाज ने 21 दिसम्बर को अपने - अपने प्रतिष्ठान बंद रखे।

हम समग्र जैन समाज को यह विश्वास दिलाते हैं कि हम सम्मेदशिखर जी तीर्थ की पवित्रता एवं पावनता को बरक़रार रखने एवं सर्वोच्च जैन तीर्थ को पवित्र जैन तीर्थ घोषित कराने का अपना यह भरपूर प्रयास जारी रखेंगें। और जब तक हमें पूर्णतः सफलता नहीं मिल जाती हमारा प्रयास जारी रहेगा।

शिखरचन्द पहाड़िया
राष्ट्रीय अध्यक्ष

सम्मेदशिखर जी की पवित्रता को बरकरार रखा जाये

जैन धर्म एवं भारत की संस्कृति में तीर्थ स्थलों के दर्शन, पुण्यशाली एवं सौभाग्य होने का सूचक है। भारत ऋषि मुनियों का देश है पूरी दुनिया में एक मात्र हमारा देश ही ऐसा देश है जहाँ सारे महापुरुषों ने जन्म लिया है। 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ति, 9 बलभद्र, 9 नारायण, 9 प्रतिनारायण, 14 कुलकर एवं अनन्त ऋषि महात्माओं ने भारत भूमि में जन्म लेकर सारी वसुधा को पवित्र किया है।

भगवान आदिनाथ एवं श्री रामचन्द्र जी की जन्मभूमि अयोध्या जी शाश्वत तीर्थ स्थल है। ठीक ऐसे ही अनन्त अरिहंतों की निर्वाण भूमि श्री सम्मेदशिखर जी भी शाश्वत तीर्थ स्थल है।

तीर्थराज श्री सम्मेदशिखरजी झारखण्ड में स्थित है जो पारसनाथ पहाड़ के नाम से भी जाना जाता है। तीर्थक्षेत्र कमेटी के पूर्व प्रयासों से पारसनाथ स्टेशन का भव्यता से निर्माण भी हुआ है। शिखरजी अपने प्राकृतिक सुरम्य वातावरण के साथ अनेकों मंदिरों टोंकों के लिए विश्व विख्यात है। बीस तीर्थंकरों एवं अनंत अरिहंत भगवंतों ने यहाँ से मोक्ष प्राप्त किया है यही कारण है कि यहाँ का कण-कण पवित्र और पावन है।

वर्तमान में तीर्थयात्रा कोई कार्य सिद्धि से, कोई मन शुद्धि से तो कोई आत्मिक शुद्धि की भावना से करते हैं। साथ ही बहुत से लोगों की मानसिकता बनती है कि चलो दर्शन भी हो जायेंगे और घूम फिर आयेंगे। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से हम हमेशा से यह अपील करते आये हैं कि तीर्थयात्रा तीर्थयात्रा ही रहे इसे पिकनिक यात्रा न बनाया जाय। पर्वतराज की पवित्रता को बनाये रखना हम सबका उत्तरदायित्व है।

वर्तमान में भारत सरकार ने **गजट अधिसूचना क्रमांक 2541 अगस्त 2019** जारी करते हुए श्री सम्मेदशिखर जी को "पर्यटन स्थल" व "पारसनाथ वन्यजीव अभ्यारण्य" घोषित किया है जो हम सभी को कभी स्वीकार नहीं है। आज अपने तीर्थक्षेत्र की पावनता और पवित्रता को बरकरार रखने के लिए सम्पूर्ण जैन समाज सरकार के इस फैसले का घोर विरोध कर रहा है और हम सम्मेदशिखर जी को पवित्र तीर्थक्षेत्र घोषित करने की मांग कर रहे हैं।

हमारे इस अंक में आप देखेंगे यह अधिसूचना जो भारत सरकार ने जारी की है तथा जिसके विरोध में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से भारत सरकार एवं झारखण्ड राज्य सरकार को विरोध प्रदर्शित कर विरोध पत्र भी दिया है जिसकी प्रतिलिपि इस अंक के अगले पृष्ठों में प्रकाशित की जा रही है ।

हम अपने तीर्थ की पावनता और पवित्रता के साथ खिलवाड़ नहीं होने देंगे, सम्मेदशिखर जी तीर्थ जैनों का है और सदैव जैनों का ही रहेगा।

हमारी सरकार से बात-चीत जारी है एवं सकल दिगम्बर जैन समाज के आन्दोलन से शीघ्र ही उपरोक्त विषय में सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय महामंत्री

सम्यक् नीति एवं सशक्त संगठन दोनों जरूरी हैं

वर्तमान में सम्पूर्ण देश का जैन समाज हमारे परम पावन, शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेदशिखर जी की रक्षा एवं उसके विशिष्ट स्वरूप के संरक्षण हेतु चिन्तित है। राजधानी दिल्ली सहित सभी बड़े नगरों एवं कस्बों में भी विरोध रैलियाँ निकाली जा रही है। ज्ञापन दिये जा रहे हैं। विभिन्न माध्यमों से शासन/प्रशासन तक समाज की भावनाएँ पहुँचाई जा रही हैं। हमारी तीर्थक्षेत्र कमेटी भी सभी शीर्ष जैन संगठनों के साथ मिलकर विरोध प्रदर्शन कर रही है चूँकि एक बार गजट नोटीफिकेशन हो चुका है अतः अब उसे बदलने हेतु भी विधिसम्मत प्रक्रिया ही अपनानी होगी। हमारे समाज में अनेक प्रतिष्ठित कानूनविद हैं, पत्रकार हैं। प्रबुद्ध राजनेता हैं, समाजसेवी हैं। शासन-प्रशासन में गहरी पैठ रखने वाले उद्योगपति हैं। सीधे-सीधे हमारे M.P./M.L.A. भले ही कम हो किन्तु उनको बनाने वाले कम नहीं हैं। अतः हम सबको एक-साथ मिल बैठकर न्यायविदों एवं वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों के परामर्श से सम्यक् नीति का निर्माण करना चाहिये। जिससे हम कानूनी प्रक्रिया का पालन कर शिखर जी की पारम्परिक पवित्रता को अक्षुण्ण बनाये रखने की स्थायी व्यवस्था कर सके। सम्मेदशिखर कोई पर्यटन स्थल नहीं, अपितु प्रत्येक जैन दिगम्बर-श्वेताम्बर, स्त्री-पुरुष, आबाल वृद्ध की आस्था का केन्द्र है। हर व्यक्ति की यह भावना रहती है कि वह जीवन में कम से कम एक बार इस शाश्वत तीर्थ की वन्दना जरूर करें। 27 कि. मी. की यह यात्रा वह क्षेत्र की अतीन्द्रिय शक्ति से प्रेरणा एवं उर्जा प्राप्त कर सहर्ष कर लेता है यह क्षेत्र का अतिशय ही है। लोग यहाँ नंगे पैर बिना कुछ खाये पूरी वन्दना प्रसन्नतापूर्वक करते हैं।

जैन धर्म की दोनों परम्पराओं दिगम्बर एवं श्वेताम्बर में समान रूप से पूज्य, वर्तमान बीस तीर्थंकरों की निर्वाण भूमि, अनन्त मुनियों की मोक्ष भूमि, जहाँ का कण-कण पवित्र है, ऐसे सम्मेदशिखर की गरिमा एवं पवित्रता की हर कीमत पर रक्षा की जानी चाहिए। सोश्यल मीडिया पर प्रसारित इस संदेश से मैं पूर्णतः सहमत हूँ कि शिखर जी जैनियों की आन बान एवं शान है यदि इसको ठेस पहुँचती है तो हमारा अस्तित्व ही खतरे में पड़ जायेगा। कुछ वर्ष पूर्व देश की सम्पूर्ण जैन समाज ने समाधि/संथारा के विषय पर जिस जागरूकता एवं एकजुटता का परिचय दिया था उसी जागरूकता, सक्रियता एवं संगठन कौशल का हमें इस बार भी परिचय देना होगा। समाज के संगठन से शक्ति प्राप्त कर हमारे प्रतिनिधियों ने माननीय सर्वोच्च न्यायालय से तब स्थगन प्राप्त किया था। अबकी बार भी हमारे प्रतिनिधि केन्द्रिय केबिनेट या अन्य सक्षम प्रक्रिया का पालन कर लक्ष्य प्राप्त करेंगे। तीर्थक्षेत्र कमेटी इस बाबत पूर्ण सजगता के साथ नेतृत्व कर रही है एवं करती रहेगी। आप सबका समर्थन एवं समर्पण ही हमारी शक्ति है।

महावीर जी महामस्तकाभिषेक-प्रसिद्ध दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी (राज.) का सम्पूर्ण गरिमा के साथ महामस्तकाभिषेक 24 वर्षों के उपरान्त परम पूज्य वात्सल्यवारिधि आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। इस आयोजन से सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज का गौरव बढ़ा है तथा तीर्थों के प्रति समाज की आस्था बलवती हुई है। श्री महावीर जी की प्रबन्धकारिणी कमेटी एतदर्थ बधाई की पात्र है।

प्राकृत भवन का शिलान्यास-प्राकृत जैन धर्म ग्रंथों की प्रमुख भाषा है। इसका अध्ययन बहुत जरूरी है। उदयपुर के मोहनलाल सुखाड़िया वि.वि. का प्राकृत एवं जैन विद्या अध्ययन विभाग प्राकृत का एक प्रमुख केन्द्र रहा है। यहाँ प्रो. सोगानी, प्रो. प्रेमसुमन जैन, प्रो. उदयचन्द जैन, प्रो. जिनेन्द्र जैन आदि मनीषियों ने अपना योगदान देकर इसे विश्वविख्यात बनाया है। दि. जैन ग्लोबल महासभा ने एक अच्छी पहल की है। आशा है कि यह केन्द्र शीघ्र मूर्त रूप लेगा तथा प्राकृत भाषा एवं साहित्य के अध्ययन का यह महत्त्वपूर्ण केन्द्र बनेगा। प्राकृत भाषा में गणित एवं विज्ञान का भी काफी साहित्य है जो हमेशा अपेक्षित रह जाता है इस पर भी ध्यान देना श्रेयस्कर होगा।

विश्व में सर्वाधिक प्रचलित ईसवी नववर्ष की पाठकों को शुभकामनाओं सहित।

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.)
मो.: 94250 53822

तपस्वी सम्राट, महातपो-मार्तण्ड, 108 आचार्यश्री सन्मतिसागरजी गुरुदेव का संक्षिप्त

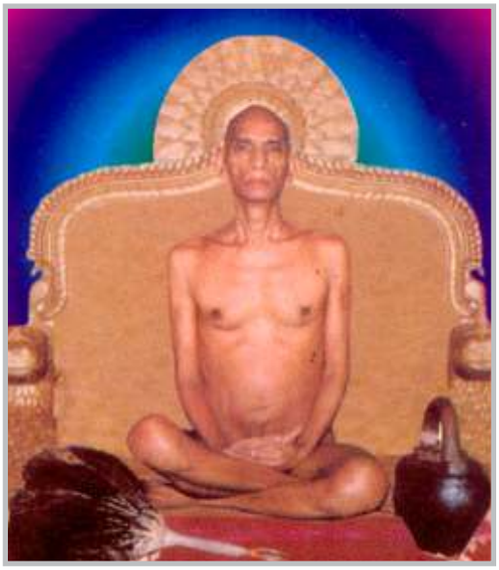

'तपस्वी सम्राट' के रूप में विश्व-विख्यात आचार्यश्री सन्मतिसागरजी गुरुदेव का जन्म उत्तर प्रदेश के एटा जिले के शिखरबंद जिनालय युक्त फफोतू ग्राम में हुआ था। माघ शुक्ला सप्तमी वि.सं. 1995 में पिताश्री प्यारेलालजी व मातुश्री जयमाला के ग्रहांगण में आप अवतरित हुए। .... अनेक शुभलक्षणों से युक्त बालक का ज्योतिषानुसार नाम 'चैन-सुख' निकला, किन्तु उसके मुख से ओम्... ओम् सुनकर सभी उसे 'ओमप्रकाश' नाम से पुकारने लगे।

बालसुलभ चेष्टाओं से वृद्धिगत होते बालक ओमप्रकाश का नाम गांव के एक शिक्षालय में शिक्षा प्राप्ति हेतु लिखा दिया गया। ... आपकी किशोरावस्था में ही आपके पिताश्री का आकस्मिक देहावसान हो गया। खुशियों की फिजाएँ गमगीनता में बदल गई। ... पढ़ाई से आपका मन उचट गया। ... आपके मामा ने प्रयास कर एटा के जैन विद्यालय में आपका प्रवेश करा दिया। जहाँ आपने बी.ए. के समकक्ष 'प्रभाकर' की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं।

उत्तर प्रदेश के मलेरिया विभाग में सरकारी नौकरी भी आप करने लगे, किन्तु पिता के देहावसान से अंकुरित वैराग्य के अंकुर बढ़ते ही गये। ... सोनागिरि की सामूहिक यात्रा के अवसर पर आगरा के बेलनगंज जैन मंदिर में आपने आचार्यश्री महावीर कीर्ति जी से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया और नमक का त्याग कर दिया।

माँ, मामा व जीजाजी के अनेक प्रयत्नों के बाद भी आप विवाह को तैयार नहीं हुए। ... स्पष्ट कह दिया कि आप छोटे भाई पुत्तूलाल से आशा रखें, मैं तो दीक्षा लूंगा। ...

नौकरी में अधिकारियों से कुछ तनातनी हो गई, फिर उसके माफी मांगने पर भी वे नहीं ठहरे। ...सीधे आचार्यश्री विमलसागरजी महाराज के श्रीचरणों में मेरठ जा पहुँचे। ... आपकी योग्यता देखकर उन्होंने श्रावण शुक्ला दूज को सात प्रतिमा देकर 'ब्रह्मचारी कुलभूषण' नाम रखा। ... श्रावण शुक्ला अष्टमी वि.सं. 2017 में क्षुल्लक दीक्षा प्रदान करते हुए 'क्षुल्लक नेमिसागर' नाम रखा। .. उनके ही कर-कमलों से सम्मेदशिखरजी में कार्तिक शुक्ला द्वादशी के शुभ दिन (वि.सं.2019) आपको जैनेश्वरी मुनि दीक्षा प्राप्त हुई। ... आपने तेल-दही आदि का त्याग करते हुए धान्यों का परिसीमन किया, खड्गासन मुद्रा से ध्यान करने की समय सीमा बढ़ाई। ज्ञानाभ्यास का लक्ष्य भी स्थिर किया।

विक्रम संवत् 2020 का चातुर्मास बाराबंकी में हुआ। वहाँ से विविध तीर्थों की वंदना करता हुआ संघ बावनगजा (बड़वानी) पहुँचा। जहाँ गुरु व गुरु के गुरु दोनों संघों का चातुर्मास एक साथ हुआ। आचार्यश्री महावीरकीर्तिजी के ज्ञान तथा उनकी शिक्षण शैली से आप बड़े प्रभावित हुए। ... श्रेष्ठ ज्ञान की आशा संजोए हुए आप वा.ग.आ. विजयमती माताजी, आचार्य गुरुदेव विमलसागरजी से पूछकर उनके साथ रहने लगे। ... आपने चटाई, घी, बूरा आदि पदार्थों का त्याग कर दिया। सात वर्ष के अध्ययनकाल में आपने गुरुदेव से केवल शास्त्र ही नहीं सीखे, अनुभव भी सीखे।

आपकी विशिष्ट योग्यताओं को देखते हुए आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज ने अपने गुरुदेव आचार्यश्री मुनिकुंजर आदिसागरजी महाराज (अंकलीकर) से प्राप्त अपना आचार्य पद शरीर त्याग के तीन दिन पूर्व ही माघ कृष्णा तीज वि.सं. 2028 (सन् 1972) में गुजरात के मेहसाना में संघ की साक्षी में आपको सौंपा। ... आपके आचार्य पद का विशेष समारोह उदयपुर में किया गया। आप तृतीय पट्टाधीश आचार्यश्री के रूप में सुप्रसिद्ध हुए।

कलकत्ता चातुर्मास में आपने सब प्रकार के धान्यों का त्याग किया। आपने सिंहनिष्क्रीड़ित, चारित्र शुद्धि, सहस्रनाम, पल्यव्रत, अष्टान्हिका व दशलक्षण आदि के निरंतर व्रत करते हुए सात हजार आठ सौ अट्ठासी से भी अधिक आपने उपवास किए हैं। ... श्री सम्मेदशिखर (1998) में आपने दूध भी त्याग दिया। क्रमिक त्याग करते हुए आपने नरवाली में गन्ने के रस का भी त्याग कर दिया और केवल जल व मट्ठे पर घोर साधना जारी रखी। ... एकांतर उपवास की तपस्या करते हुए वे अष्टान्हिका व दशलक्षण के भी उपवास करते रहे।

भारत देश के विभिन्न क्षेत्रों में उन्हें तपस्वी सम्राट, आध्यात्म योगी, श्रमण चक्रवर्ती, महातपो-मार्तण्ड, तार्किक चूड़ामणि, चारित्र-चक्रवर्ती, भारत गौरव, युगाचार्य शिरोमणि आदि उपाधियों से विभूषित किया गया है।

वे तपस्या के सिरमौर थे। अपने श्रेष्ठतम जीवन का सार साधते हुए उन्होंने तीन उपवास पूर्वक अत्यन्त प्रयत्न से श्रेष्ठ इंगिनी मरण साधा। तिहत्तर वर्ष की आयु में 24 दिसम्बर, 2010 के ब्रह्ममुहूर्त में वे अपनी बाहरी आँखों से जिन भगवान तथा भीतरी आँखों से निज भगवान आत्मा को निहारते हुए सकल संकल्प-विकल्प, पद-प्रमुखता छोड़कर चले गये। उनकी भावनानुसार मुझे (आचार्य सुनीलसागर) अंकलीकर परंपरा का चतुर्थ पट्टधर बनाया गया। मैं उनके सिद्धांतों के अनुसार प्रवृत्ति करने का उद्यम करूँगा।

आचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज

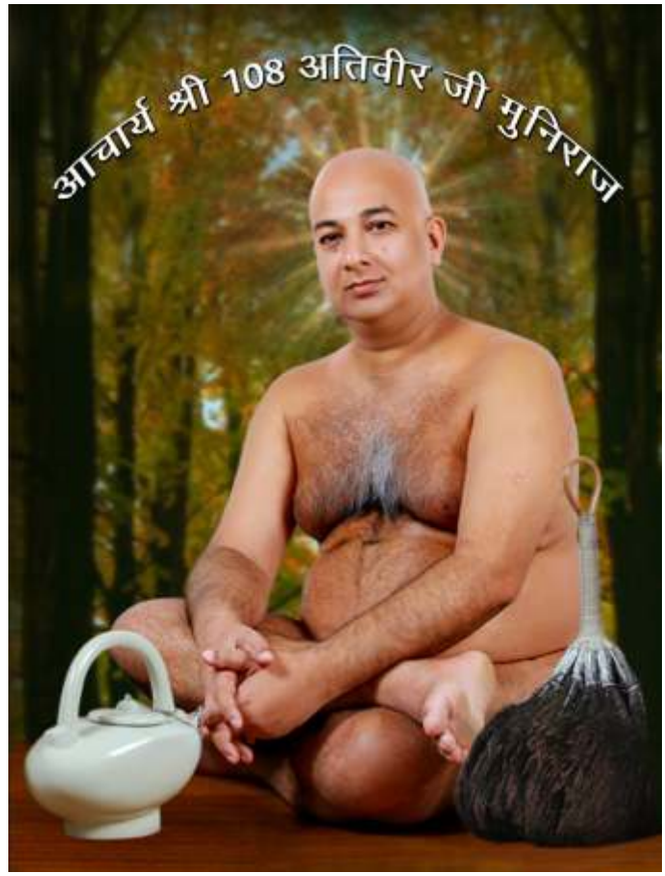

प्रशममूर्ति आचार्य श्री 108 शान्तिसागर जी महाराज (छाणी) की गौरवशाली परम्परा में पंचम पट्टाधीश परम पूज्य गुरुवर आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज की असीम अनुकम्पा से परम पूज्य सल्लेखनारत आचार्य श्री 108 मेरु भूषण जी महाराज ने अपने परम प्रभावक अनुज-भ्राता एलाचार्य श्री 108 अतिवीर जी महाराज की विशेष योग्यता, दिव्यता, संगठन व संचालन कुशलता एवं गंभीरता को देखते हुए श्रमण परंपरा के वर्तमान में सर्वोच्च पद "**आचार्य पद**" पर प्रतिष्ठित करने की घोषणा कर भक्तों को प्रफुल्लित कर दिया| पूज्य आचार्य श्री ने कहा कि आपके द्वारा अल्पसमय में ही अभूतपूर्व ज्ञान-गंगा का प्रवाह निरंतर गतिमान है तथा विभिन्न नगरों में व्यापक धर्म प्रभावना संपन्न हो रही है।

आपकी छलछलाती मंद-मंद मुस्कान हर बाल-वृद्ध को अपनी ओर सहज ही आकर्षित कर लेती है| लगभग 26 वर्षों की सतत संयम साधना से फलीभूत अथाह ज्ञान भंडार, तप-त्याग-साधना, समाज-उद्धारक मानसिकता, स्व-पर कल्याण की भावना, एकता व संगठन, साधर्मी वात्सल्य, गंभीर चिंतन, धैर्य आदि अनेकों योग्य गुणों को देखते हुए यह कहना अतिश्योक्ति ना होगी कि आप जैन धर्म के वाङ्ग्मय में एक प्रखर प्रकाश पुंज की भांति दैदीप्यमान नक्षत्र बनकर जगमगाएंगे|

गुरुवर आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज द्वारा दीक्षित समस्त शिष्य समुदाय में आप एकमात्र ऐसे शिष्य हैं जिन्हें उन्होंने स्वयं अपने कर-कमलों द्वारा कोई पद प्रदान किया है। एलाचार्य पद के पश्चात् गुरुवर द्वारा आपको आचार्य पद से भी सुशोभित किया जाना था परन्तु अचानक ही उनके समाधिमरण हो जाने से यह कार्य अधूरा रह गया| गुरूजी की भावना के अनुरूप गुरुभ्राता द्वारा अधूरा कार्य पूर्ण हुआ| गहन चिंतक, विचारक, प्रवचनकार व कुशल मार्गदर्शक के रूप में आपने अल्पसमय में ही जैन समाज को नयी दिशा प्रदान करने की सार्थक पहल की| आप हर उस कार्य को सहजता से कर लेते हैं जिसके लिए जैन समाज एक सही नेतृत्व का इंतज़ार करता रह जाता है| युवा पीढ़ी को कुशलतापूर्वक सही दिशा में अग्रसर करने में आपके हर कदम पर हज़ारों युवा चलने को तैयार हो जाते हैं|

आने वाला कल जिनके हाथों में है, उनको सही दिशा में आगे बढ़ाने की कला के भण्डार हैं| स्पष्ट सोच, स्वच्छ कार्यप्रणाली, निश्चित दिशा, हर विचार को यथार्थ में सहजता से अग्रसित कर देती है| आपके द्वारा विभिन्न प्रसंगों पर किये गए उत्कृष्ट कार्य श्रमण व श्रावक के लिए प्रेरक उदाहरण हैं| आपकी इन्हीं विलक्षण प्रतिभा व विशेषताओं को देखते हुए छाणी परंपरा के द्वितीय पट्टाधीश परम पूज्य आचार्य श्री 108 विजय सागर जी महाराज के समाधि दिवस के प्रसंग पर आपके गुरुभ्राता परम पूज्य सल्लेखनारत आचार्य श्री 108 मेरुभूषण जी महाराज ने दिनांक 20 दिसम्बर 2020 को एम. डी. जैन कॉलेज, हरीपर्वत, आगरा (उ.प्र.) में हजारों गुरुभक्तों के समक्ष तथा अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद् के विद्वानों की अनुमोदना के साथ विधि-विधान पूर्वक आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया।

परम पूज्य आचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज के श्रीचरणों में द्वितीय आचार्य पद प्रतिष्ठापन दिवस के पुनीत अवसर पर शत-शत नमन...

काशी की जैन विद्वत् परम्परा

प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी', वाराणसी

पिछले अंक से शेष .....

गतिविधियाँ : अनेक राष्ट्रीय सगोष्ठियों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं आदि का संयोजन एवं शोध निबंध प्रस्तुत तथा अनेक शोधछात्रों को पीएच.डी. उपाधि हेतु मार्गदर्शन।

पुरस्कार–१. श्री चांदमल पाण्ड्या पुरस्कार (१९८१), २. महावीर पुरस्कार (१९८८), ३. चम्पालाल स्मृति साहित्य पुरस्कार, ४. विशिष्ट पुरस्कार (उ. प्र. संस्कृत संस्थान लखनऊ, १९९८), ५. श्रुतसंवर्धन पुरस्कार (१९९८), ६. गोम्मटेश्वर विद्यापीठ पुरस्कार (२०००), ७. आचार्य ज्ञानसागर पुरस्कार (२००५), ८. अहिंसा इण्टरनेशनल एवार्ड (२००९), ९. डॉ० पन्नालाल साहित्याचार्य पुरस्कार (२००९), १०. अ. भा. जैन विद्वत् सम्मेलन (श्रवणबेलगोला) संयोजकीय सम्मान (२००६), ११. जैन आगम मनीषा सम्मान, जैन विश्वभारती, लाडनूं (२०१३), १२. उत्तर प्रदेश सरकार के संस्कृत संस्थान द्वारा से सम्मानित 'विशिष्ट पुरस्कार' (२०१८), १३. गणेश वर्णी पुरस्कार (२०१८), १४. राष्ट्रपति पुरस्कार (१०१८), १५. अ. भा. जैन विद्वत् संस्कृत सम्मेलन श्रवणबेलगोला संयोजकीय सम्मान (२०१८), १६. महावीर पुरस्कार (द्वितीय बार) २०१९, १७. श्रमण संस्कृति उन्नायक पुरस्कार (अखिल भारतवर्षीय दि० जैन तीर्थ संरक्षणी महासभा द्वारा (२०२१)।

डॉ० शीतलचन्द जैन-

आपका जन्म तिथि-१-९-१९४८ को कुसगाड़ में हुआ।

आपने श्री स्याद्वाद महाविद्यालय काशी में रहकर जैनदर्शनाचार्य, एम.ए. (संस्कृत), विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) विषय-आचार्य विद्यानंदस्य दार्शनिक सिद्धान्तानां समालोचनात्मकमध्ययनम् (संस्कृत भाषा), सिद्धान्तशास्त्री, आदि उपाधियाँ प्राप्त कीं।

धारित पद-१. पूर्व दर्शन विभागाध्यक्ष, श्री स्याद्वाद महाविद्यालय, वाराणसी २. पूर्व प्राचार्य, श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, मनिहारों का रास्ता, जयपुर (राज.) ३. पूर्व संकायाध्यक्ष, श्रमण विद्या संकाय, राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर। ४. मानद निदेशक, श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर, जयपुर। ५. पूर्व मानद मंत्री एवं अध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत् परिषद। आपका अध्यापन अनुभव-स्नातक एवं स्नातकोत्तर अध्यापन अनुभव ३० वर्ष। आपके सफल निर्देशन में अनेक शोधछात्र पी-एच.डी. कर चुके हैं।

अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठियों में सहभागिता। लगभग ६० शोध आलेख राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

लेखन एवं सम्पादन-१. आचार्य विद्यानन्दस्य दार्शनिक सिद्धान्तानां समालोचनात्मकमध्ययनम्। (शोध प्रबन्ध संस्कृत भाषा में अप्रकाशित) २. प्रमाणप्रमेयानुप्रवेश (दार्शनिक कृति), ३. ज्ञानदर्पण (बालबोध जैन धर्म) ४ भाग ४. न्यायमणि दीपिका (नव्यन्यायशैली की दार्शनिक कृति अप्रकाशित है), भगवान ऋषभदेव।

सम्पादित कृतियाँ–अनेक पत्र-पत्रिकायें, अभिनन्दन एवं अन्यान्य ग्रन्थ उपलब्ध हैं। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर वार्ताओं एवं परिचर्चाओं का प्रसारण।

सम्मान एवं पुरस्कार–अनेक स्थानों से सम्मानित एवं पुरस्कृत, देश के विभिन्न परीक्षा बोर्ड, विश्वविद्यालयों के अध्ययन मण्डल, परीक्षा समिति के विशेषज्ञ सदस्य। अनेक अखिल भारतीय साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्थाओं के महत्वपूर्ण पदों पर पदाधिकारी तथा उनके संचालन में सक्रिय भागीदारी।

प्रशासनिक दायित्वों का निष्पादन-१. सुपरिन्टेण्डेन्ट, श्री स्याद्वाद महाविद्यालय, वाराणसी १ अप्रैल १९७१ से ११ जुलाई १९७२ तक, २. दर्शनविभागाध्यक्ष श्री स्याद्वाद महाविद्यालय, वाराणसी १२ जुलाई १९७२ से २९ अक्टूबर १९८२ तक, ३. इसके बाद प्राचार्य, श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, मनिहारों का रास्ता, जयपुर में अनेक वर्षों तक सेवायें प्रदान कीं।

प्रो० कमलेश कुमार जैन-

आप संस्कृत साहित्य, जैन धर्म-दर्शन के सुप्रसिद्ध वरिष्ठ विद्वान् हैं। पिता श्री सिं० मल्लेलाल जी थे। दि. १-११-१९५० को आपका जन्म पिपरिया (टिकरी) जिला-दमोह (म. प्र.) में हुआ। आपने एम.ए. (संस्कृत, पालि, प्राकृत), जैनदर्शनाचार्य तथा पी-एच.डी. की उपाधियाँ उच्च श्रेणी में प्राप्त कीं। श्री शान्ति निकेतन जैन संस्कृत विद्यालय, कटनी (म. प्र.), श्री स्याद्वाद महाविद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एवं पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी से आपने शैक्षणिक योग्यतायें प्राप्त कीं। जैन विश्व भारती, लाडनूं में शोध-सहायक के रूप में तदनन्तर श्री स्याद्वाद महाविद्यालय में कई वर्षों तक सेवा में प्रदान कीं। सन् १९८५ में आप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत विद्या संकाय जैन-बौद्ध दर्शन विभाग में प्राध्यापक के रूप में नियुक्त होकर क्रमशः रीडर, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष पद पर प्रोन्नत हुए। सन् २०१६ में सेवा निवृत्त होकर साहित्यिक एवं सामाजिक सेवाओं में संलग्न हैं। आपके ज्येष्ठ सुपुत्र काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के जैन-बौद्ध

विभाग में प्राध्यापक पद पर सेवा में संलग्न युवा विद्वान् डॉ० आनन्द कुमार जैन भी आपके पद चिह्नों पर चलकर अध्ययन-अध्यापन आदि में संलग्न हैं।

आपके अनेकों शोधालेख प्रकाशित हैं। आपका बहुत ही श्रमपूर्वक लिखित शोध प्रबन्ध ''जैनाचार्यों का अलङ्कारशास्त्र में योगदान बहुत ही लोकप्रिय है, जो कि पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी से प्रकाशित है। इसके अतिरिक्त आपके द्वारा सम्पादित अनेक ग्रन्थ हैं, जिनमें प्रमुख हैं–

योगसार, पञ्चाशक प्रकरण, जैन-न्याय भाग-२, जैन न्याय को आचार्य अकलंकदेव का अवदान, दर्शनसार, लघीयस्त्रय तथा सुदर्शन चरित आदि।

आप अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से पुरस्कृत और सम्मानित हैं। अभी आपको उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ से 'विशिष्ट पुरस्कार'' से भी सम्मानित किया गया है।

प्रो० अशोक कुमार जैन-

आपका जन्म ललितपुर (उ.प्र.) जिले के मड़ावरा नगर में एक मार्च सन् १९५९ को हुआ। आपके पिता श्री शिखर चन्द जी जैन एवं माता श्रीमती अशर्फी देवी हैं। आपने एम. ए. संस्कृत, जैनदर्शनाचार्य एवं डी० फिल० की परीक्षा में उच्च श्रेणी में उत्तीर्ण कीं। आप श्री स्याद्वाद महाविद्यालय, वाराणसी के भी स्नातक रहे।

शैक्षणिक सेवायें–१. संस्कृत प्रवक्ता, वर्द्धमान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिजनौर, (उ०प्र०), २. प्राचार्य-श्री स्याद्वाद सिद्धांत संस्कृत महाविद्यालय, ललितपुर, ३. दिनांक १९ फरवरी, १९९३ से ६ नवम्बर, २००६ तक जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) लाड़नूं (राज) में जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म दर्शन विभाग में प्राध्यापक एवं प्रभारी विभागाध्यक्ष, ४. दिनांक ८ नवम्बर, २००६ से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, के अन्तर्गत जैन-बौद्ध दर्शन विभाग में ७ नवम्बर, २००९ तक रीडर पद, दिनांक ८ नवम्बर, २००९ से ७ नवम्बर २०१२ तक सह आचार्य तथा दिनांक ८ नवम्बर २०१२ से प्रोफेसर पद पर कार्यरत। वर्तमान में विभागाध्यक्ष हैं।

पुस्तक लेखन-१. जैन दर्शन में अनेकान्तवाद: एक परिशीलन, २. आचार्य ज्ञानसागर महाराज का दार्शनिक अवदान, ३. जैनधर्ममीमांसा। इसके अतिरिक्त २१ ग्रंथों का सम्पादन, अनुवाद आदि तथा विद्वत् अभिनन्दन ग्रंथों का सम्पादन। सम्पादित ग्रन्थों में 'भारतीय वाङ्मय को आचार्य विद्यासागर महाराज का योगदान' एक श्रेष्ठ ग्रन्थ है।

सम्मान-१. १९९३ में अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद् द्वारा जे० के० एल० जैन ट्रस्ट अहमदाबाद शोध पुरस्कार, २. २००३ में श्री स्याद्वाद महाविद्यालय, वाराणसी द्वारा श्री गणेश प्रसाद वर्णी स्मृति साहित्य पुरस्कार, ३. २००४ में अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत् परिषद् द्वारा गुरू गोपालदास वरैया पुरस्कार, ४. २००६ में जैनविद्या संस्थान महावीर जी से (राज०) से महावीर पुरस्कार, ५. आचार्य ज्ञानसागर वागर्थ विमर्श केन्द्र व्यावर (राज०) द्वारा २००७ में महाकवि आचार्य ज्ञानसागर १८वां पुरस्कार, ६. श्रुत संवर्द्धन संस्थान मेरठ (उ० प्र०) द्वारा 'आचार्य श्री सुमतिसागर स्मृति श्रुत संवर्द्धन शोध पुरस्कार, २००८, ७. सार्वभौमिक प्राच्य विद्या संस्थान, वाराणसी द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द पुरस्कार २०१८, ८. श्री दिगम्बर जैन महासमिति वाराणसी संभाग द्वारा जैन विद्वत् रत्न प्रशस्ति पुरस्कार।

संस्थागत विशिष्ट पद-१. जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनूं राज० के प्रबन्धतन्त्र, २. अकादमिक ३. (राज०) के सीनेट समिति के सदस्य रहे ४. वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा रामाकृष्णपुरम नई दिल्ली के प्राच्य-धर्म-कोश मीमांसा स्कीम के अन्तर्गत जैनदर्शन कोश निर्माण के विशेष सदस्य, ५. जैन बौद्ध दर्शन विभागीय अध्ययन समिति के सदस्य रहे, ६. संयुक्त मंत्री, श्री गणेश वर्णी दिगम्बर जैन संस्थान, नरिया, वाराणसी २०१० से, ७. दिनांक १५-०४-२०१७ से श्री स्याद्वाद महाविद्यालय वाराणसी के प्रबन्धतंत्र के सदस्य तथा उपाधिष्ठाता, ८. श्रमण विद्या संकाय, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय बोर्ड के सदस्य, ९. बौद्ध दर्शन विभागीय अनुसंधान उपाधि समिति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के सदस्य, १०. पार्श्वज्योति मासिक पत्रिका, बुरहानपुर (म० प्र०) के वरिष्ठ सम्पादक।

अनेक संगोष्ठियों, सम्मेलनों एवं कार्यशालाओं में सहभागिता प्रकाशित शताधिक शोध आलेख प्रस्तुत किये। देश के प्रमुख नगरों में अनेक संगोठियाँ, सम्मेलनों, कार्यशालाओं का संयोजन किया–(उ० प्र०), २. षट्खडागम आगम वाचना ललितपुर (उ० प्र०), ३. वीरोदय काव्य अनुशीलन, ४. ''जैनन्याय को आचार्य अकलंकदेव का योगदान'' राष्ट्रीय संगोष्ठी शाहपुर (उ० प्र०)।

शोध अनुभव-१६ शोध छात्र/छात्राओं का शोध निर्देशन तथा इन्होंने विभिन्न विश्वविद्यालयों से पी-एच०डी०, विद्यावारिधि की उपाधियाँ प्राप्त की है। जैन विद्या के संरक्षण, संवर्द्धन, प्रचार एवं प्रसार में विशेष अभिरूचि।

जैनदर्शन के क्षेत्र में विद्वानों के साथ ही काशी की जैन विदुषी महिलाओं का योगदान भी उल्लेखनीय है। अत: इसे यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है–

प्रो० मुकुलराज मेहता-

सुप्रसिद्ध विद्वान् एवं पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ० निदेशक डॉ० मोहनलाल जी मेहता के सुपुत्र प्रो० मुकुलराज

मेहता का जन्म वाराणसी में हुआ। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में स्वर्ण पदक के साथ आपने एम. ए. और यहीं से पी-एच.डी. उपाधि प्राप्त की, तथा यहीं आप विगत ३५ वर्षों से अध्यापन कार्य कर रहे हैं। आप दर्शन विभाग के अध्यक्ष पद को भी सुशोभित कर चुके हैं।

आपके सफल निर्देशन में अब तक ५८ शोध छात्र पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं तथा बीस छात्र पोस्ट डाक्टोरल फेलोशिप कर चुके हैं। आप एक उदारमना, सबका यथायोग्य सहयोग करने वाले लोकप्रिय विद्वान् हैं। देश-विदेश की अनेक प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में आपअनेक शोधालेख प्रकाशित हो चुके हैं। साथ ही अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों-संगोष्ठियों में शोधालेख प्रस्तुत कर चुके हैं। अनेक शोध पत्रिकाओं के सम्पादन सह-सम्पादन भीकिया है। आपके द्वारा लिखित एवं प्रकाशित पुस्तकें इस प्रकार हैं–

१. जैन मत में अध्यात्मिक विकास, २. डिफरेन्ट अस्पेक्ट आफ जैनिज्म, ३. डिक्शनरी ऑफ जैन टर्म, ५. कुछ प्रसिद्ध ग्रन्थों की आपकी भूमिकायें-प्रकाशित हैं–तथा कुछ ग्रन्थों, पत्रिकाओं के सम्पादक भी रहे हैं।

आपको अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए, किन्तु सर्वाधिक प्रतिष्ठित जिस पुरस्कार से आप सम्मानित हुए हैं, वह है कलकत्ता का वह विचार मंच, जो अध्यात्म साहित्य, कला, संगीत, राजनीति तथा समाज से आदि विविध क्षेत्रों में सेवायें देने वाले देश-विदेश की विभूतियों को प्रदान किया जाने वाला प्रतिष्ठित ''आचार्य हेमचंद्र साहित्य सम्मान''।

विदुषी महिलायें-

डॉ० निर्मला जैन-

जैनधर्म-दर्शन की वरिष्ठ विदुषी ब्र० डॉ० निर्मला जैन का जन्म दि० ३१-१०-१९४५ को वाराणसी में हुआ। आपके पिता श्री बाबूलालजी और मातुश्री भगवानदेवी जैन हैं। आपने एम. ए. (संस्कृत), जैनदर्शनाचार्य की उपाधियाँ प्राप्त कर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से आचार्य प्रभाचन्द्रकृत ''प्रमेयकमलमार्तण्ड: का समीक्षात्मक अध्ययन'' विषय पर सन् १९७७ में पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। आपने वाराणसी के दो महिला महाविद्यालयों में अस्थायी रूप से अध्यापन कार्य करके सन् १९८४ से श्री स्याद्वाद महाविद्यालय में दर्शन विभागाध्यक्ष के पद पर निरन्तर जैनदर्शन के शास्त्रों का अध्यापन करा रही हैं। आपके पढ़ाये हुए छात्रों में अनेक पूज्य भट्टारक स्वामी जी एवं मुनिराज हैं, साथ ही अनेक विद्वान् उच्च पदों पर पदस्थ हैं। अनेक शोध पत्र-पत्रिकाओं, अभिनन्दन ग्रन्थों आदि में शोध-आलेख प्रकाशित हैं और इन्हें कुछ संगोष्ठियों में भी प्रस्तुत किया है। पर्युषण पर्व आदि प्रसंगों में जैन-धर्म-दर्शन आदि विषयों पर प्रवचन भी समय-समय पर करती रहती हैं। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय की जैनदर्शन एवं प्राकृत जैनागम पाठ्यक्रम समिति की आप सदस्या भी रह चुकी हैं।

संस्कृत-प्राकृत भाषा के जैनदर्शन विषयक मूलग्रन्थों के पठन-पाठन में आपकी विशेषज्ञता ही आपकी विशेष पहचान है।

श्रीमती डॉ० मुन्नी जैन-

ब्राह्मी लिपि की विशेषज्ञा के रूप में प्रसिद्ध श्रीक्षेत्र श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में महामस्तकानिभषेक (१०१८) के पावन अवसर पर आयोजित महिला महासम्मेलन के अवसर पर 'आदर्श महिला सम्मान' से सम्मानित डॉ० मुन्नी जैन का दमोह (म.प्र.) में दि० २२/६/१९५७ को हुआ। आपके पिताश्री हुकमचन्द जैन गड़रवाले एवं मातुश्रीमती संतोषरानी जैन थीं।

मेट्रिक (११वीं) कक्षा तक दमोह में ही अध्ययन किया। इसके बाद आपका विवाह दलपतपुर (सागर म. प्र.) के मूल निवासी, उस समय बी. एच. यू. वाराणसी में पी-एच.डी. उपाधि हेतु शोध कार्यरत फूलचन्द जैन प्रेमी से हो गया। किन्तु अध्ययन के प्रति गहरी रुचि होने के कारण इन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी और सागर यूनिवर्सिटी से बी.ए. किया तदनन्तर वाराणसी में रहकर क्रमश: एम. ए. प्राकृताचार्य, जैन दर्शनाचार्य, बी.एड., ग्रन्थालय-विज्ञान शास्त्री तथा यू.जी.सी. की नेट परीक्षायें अच्छी श्रेणी में उत्तीर्ण कर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग से ''हिन्दी गद्य के विकास में जैन मनीषी पं० सदासुख दास का योगदान'' विषय पर पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

आपका यह शोध प्रबन्ध पुरस्कृत तो हुआ ही, साथ ही हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् प्रो० नामवर सिंह जी द्वारा इस शोधप्रबन्ध पर लिखित प्रशंसात्मक भूमिका बड़ी ही महत्वपूर्ण है। निरन्तर अध्ययन-स्वाध्याय प्राचीन पाण्डुलिपि सम्पादन, ब्राह्मी लिपि के प्रशिक्षण तथा शोधालेख लेखन में आपकी विशेष अभिरुचि है। अनेक शोधालेख भी अपने साहित्य की विभिन्न विधाओं पर लिखे–जो बहुचर्चित रहे, संगोष्ठियों में भी प्रस्तुत किये। पिछले ग्यारह वर्षों से आप सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के जैनदर्शन विभाग में अतिथि व्याख्याता के रूप में सेवायें प्रदान कर रहीं है।

ब्राह्मी लिपि–प्रशिक्षण–देश के ख्यातिलब्ध विद्वानों से ब्राह्मी लिपि का प्रशिक्षण लेकर इस लिपि में विशेषज्ञता अर्जित की। इसके बाद देश के अनेक नगरों में तथा कोरोना काल में आनलाइन आयोजित कार्यशालाओं के माध्यम में ब्राह्मी लिपि का प्रशिक्षण देकर इसके प्रचार-प्रसार में तथा इसके प्रति जनसाधारण तक में अभिरुचि और जागरूकता बढ़ाकर बहुमूल्य योगदान किया है।

लगभग पच्चीस वर्षों से देश के बड़े-बड़े नगरों में पर्युषण पर्व तथा अन्य विशेष अवसरों पर समाज के आमंत्रण पर प्रवचनार्थ भी जाती रही हैं और यह क्रम अब भी जारी है।

हस्तलिखित ग्रन्थ सम्पादन–अनेकान्त विद्वत् परिषद् से बृहदाकार में एक हजार पृष्ठों में प्रकाशित ''मूलाचार भाषा वचनिका'' नामक ग्रन्थ के मुख्य सम्पादन का कार्य भी अपने जीवन साथी प्रो० फूलचन्द जैन प्रेमी के साथ किया है। इस ग्रन्थ की मूल प्राचीन हस्तलिखित पाण्डुलिपि की छाया प्रतियाँ तिजारा और अजमेर के शास्त्र भण्डारों से प्राप्त हुई थीं। लगभग सात वर्षों के अथक श्रम के बाद यह दुर्लभ महान् ग्रन्थ पहली बार सम्पादित रूप में प्रकाश में आया। इसके साथ ही आपने १. अनगार वन्दना बत्तीसी, २. पंचेन्द्रिय संवाद, ३. मुनिराज वंदना बत्तीसी, ४. सम्यक्त्व पच्चीसी और ५. रत्नजोगसार–इन लघु पाण्डुलिपियों का सम्पादन कार्य किया है, जो कि पार्श्वनाथ विद्यापीठ से प्रकाशित ''श्रमण'' नामक शोध पत्रिका में प्रकाशित हैं। इसके अतिरिक्त भी इसी विद्यापीठ के सेवाकाल में पाँच और लघु पाण्डुलिपियों का सम्पादन किया था, जो अप्रकाशित हैं।

पुरस्कार–१. आचार्य कुन्दकुन्द पुरस्कार (१९९६) आ० कुन्दकुन्द शिक्षण संस्थान ट्रस्ट मुम्बई, २. विशेष पुरस्कार-(१९९७) उ. प्र. सरकार द्वारा संचालित उ. प्र. संस्कृत संस्थान, लखनऊ, ३. ब्र. पूरणचंद ऋद्धिलता पुरस्कार (शोध प्रबन्ध पर २००४) जैन विद्या संस्थान, जयपुर, ४. आदर्श महिला सम्मान-(२०१८) महामस्तकाभिषेक (श्रवणबेलगोला) के अवसर पर, ५. अजमेर, कानपुर, मुम्बई, आसाम आदि शहरों में पर्युषण पर्व पर विशेष सम्मान।

विशेष–आपने गृहस्थ जीवन की सभी जिम्मेदारियों का कुशलता के साथ निर्वहन करते हुए स्वयं उच्च शिक्षा प्राप्त की और अपने तीनों बच्चों को भी इसी के लिये प्रेरणायें प्रदान कीं। इसी कारण आज इनके ज्येष्ठ पुत्र राष्ट्रपति पुरस्कार से पुरस्कृत डॉ० अनेकान्त कुमार जैन, नई दिल्ली स्थित लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के जैनदर्शन विभाग में प्रोफेसर हैं। सुपुत्री डॉ० इन्दु जैन राष्ट्रगौरव दिल्ली दूरदर्शन, आकाशवाणी से जुड़कर जैनधर्म संस्कृति और समाज सेवा में सक्रिय रहती हैं। छोटा बेटा डॉ० अरिहन्त कुमार जैन, बैंगलौर स्थित जैन युनिवर्सिटी के जैन विद्या केन्द्र में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं। तीनों बच्चे प्राकृत भाषा, साहित्य और जैन धर्म-संस्कृति की प्रभावना में निरन्तर संलग्न हैं।

उपसंहार –''काशी की और विद्वत् परम्परा''– इस विषय पर लिखना जितना सरल लगता है, उतना है नहीं। अनेक स्रोतों से इस विषयक सामग्री इकट्ठी करके, क्रमबद्ध रूप में संजोकर प्रस्तुत करना अति कठिन ही नहीं, चुनौतीपूर्ण कार्य भी था। किन्तु अनेक वर्षों से इस विषय पर लिखने का मन होने से विविध कठिनाईयों के बाद भी इसे प्रसन्नतापूर्वक प्रस्तुत करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। यद्यपि इसे मैं अभी परिपूर्ण नहीं मानता अभी भी और यशस्वी विद्वान् होंगे जिन्होंने काशी में रहकर ज्ञान साधना की होगी, किन्तु मुझे उनकी जानकारी अप्राप्त रही। नये युवा विद्वान् भी अपनी सृजनशीलता से इस परम्परा में आगे आयेंगे। मुझे स्याद्वाद महाविद्यालय, काशी में शिक्षाप्राप्त महाकवि पं० भूरामल जी, जो कि बाद में मुनिदीक्षा धारण कर आचार्य ज्ञानसागर जी मुनिराज (सन्त-शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के दीक्षा गुरु) जैसे अनेक विद्वानों का इस प्रसंग में नाम स्मरण आ रहा है, जिन्होंने महाकवि कालिदास के समकक्ष ''जयोदय'' जैसे अनेक संस्कृत महाकाव्यों की रचना कर जैन विद्वत् जगत् का सम्मान और गौरव बढ़ाया। किन्तु उन्हें काशी की जैन विद्वत् परम्परा विषयक इस लेख में इसलिए सम्मिलित नहीं कर पाया, क्योंकि इनका कार्यक्षेत्र काशी के बाहर रहा। ऐसे ही और भी अनेक विद्वान् रहे, फिर भी यहाँ काशी को अपना कार्यक्षेत्र बनाने वाले विद्वानों का यहाँ परिचय और योगदान प्रस्तुत करने का यह प्रथम प्रयास है। इनके अतिरिक्त कुछ विद्वानों की तथा कुछ और अधिक जानकारी किसी से भी यदि प्राप्त होती है, तो हम उसे सधन्यवाद एवं सहर्ष इस लेख में सम्मिलित करने का प्रयास करेंगे।

आधार ग्रन्थ–

१. श्री स्याद्वाद महाविद्यालय : शताब्दी स्मारिका-२००४-संपा० प्रो० फूलचन्द जैन प्रेमी।

२. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जैन समाज का योगदान : डॉ० कपूरचंद जैन, प्रका० प्राकृत, जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली-सन् २०१२.

३. बीसवीं शताब्दी के जैन विद्वानों का अवदान : संपा०-डॉ० शीतलचंद जैन और प्रो० फूलचन्द जैन प्रेमी, प्रका० अ०भा० दिगम्बर जैन विद्वत् परिषद्, सन् २०१२.

४. काशी नगरी की जैन विद्वत्परम्परा-आलेख-डॉ० अशोक कुमार जैन, का.हि.वि.वि.

५. सारस्वत मनीषी : प्रो० फूलचन्द जैन प्रेमी-प्रका० श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला महामस्तकाभिषेक महोत्सव समिति अ०भा० जैन विद्वत् सम्मेलन २००६.

६. जैन जागरण के अग्रदूत अयोध्या प्रसाद गोयलीय, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी सन् १९५२

७.शारदा के सपूत : सं० नरेन्द्र प्रकाश जैन, प्राच्य श्रमण भारती, मु० नगर, सन् २००९.

तमिलनाडु एवं वहाँ की प्राचीनता

वसंत शास्त्री, चेन्नई

तमिल जैन इतिहास में पुरातनत्व को अपने में समेटे हुए क्षेत्र में से प्रथम हम एक ऐसे क्षेत्र के विषय से प्रारंभ करेंगे जिसके विषय में, महान आचार्य अकलंक देव का आवास स्थान एवं तपस्थली साथ ही आचार्य देव द्वारा चलाया गया गुरुकुल जिसे 'समणर पल्ली' कहा गया है, उसका भी पुरातत्वज्ञों की मान्यताएं प्राप्त होती हैं।

माना जाता है कि यहाँ के पर्वत में अनेकों ऐसे महान आचार्यों का वास रहा जिसका प्रमाण यहाँ के चट्टान में खुदाई गई ध्यान स्थली, गुफा एवं जड़ी बूटियों से बने चित्र व काव्य के उल्लेख से स्पष्ट मिलता है।

परवा दिमलन् सीडराम् परसम
यक्कोलरि यान
अरिपोरु अट्ट नेमि आचारियर्
अमैवुडन् पुरिवित्त
विरसबर् पार्सुवर् वीरराम् बागु
पलिप्पेर् परमरोडु
तिरुवर नायगि उरैदरु तिरुमलै
तेर्वार् विनैयरुमे !
- तिरुमलै तवप्पल्लि पदिगम्

इसमें उल्लेखित है कि "आचार्य अरिष्ठनेमी जी" ने इस क्षेत्र के गुफा में शिल्प कार्य करवाया था इतनी महानता को लिए ऐसा कौनसा क्षेत्र है? हमें तो उस क्षेत्र का दर्शन करना ही है, जहाँ आज भी हम उस शक्ति को महसूस कर पाते हों।

कहां है यह क्षेत्र? क्षेत्र का नाम क्या है?

तमिलनाडु के तिरुवन्नामलै जिले के पोलूर तालुक में स्थित यह क्षेत्र **'श्रीशैलपुरी'** है जिसे आज **तिरुमलै व अरिहंतगिरी** नाम से जाना जाता है।

(Google map satellite view)

(स्वकीय यातायात की व्यवस्था से यहाँ पहुँचनेवालों के लिए)

From Chennai चेन्नई से आने वाले

चेन्नई » श्रीपेरुंबुदूर » सुंगुवार्चत्तिरम् » आर्काडु » आरणि » कलंबूर » वडमादिमंगलम् » होते हुए **तिरुमलै** पहुंचते हैं I

From Banglore बैंगलूर से आने वाले

बैंगलूर » ओसूर » कृष्णगिरि » वाणियम्बाडि » वलूर » वडमादिमंगलम् » होते हुए **तिरुमलै** पहुंचते हैं I

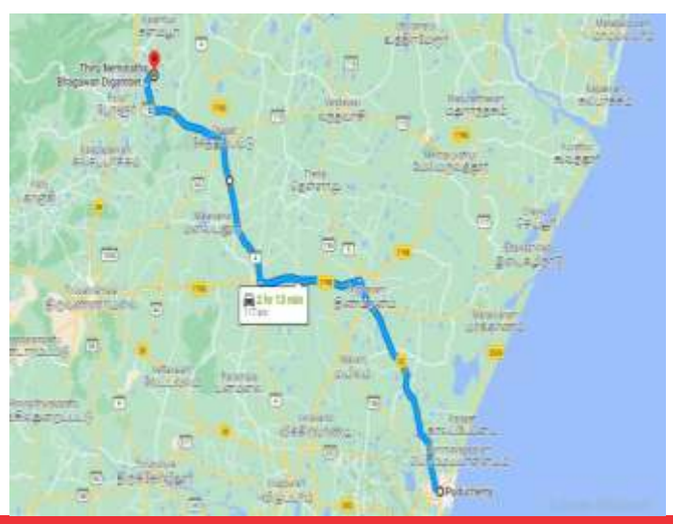

From Pondichery(puduchery) पोण्डिचेरी से आने वाले
पोण्डिचेरी » तिण्डिवनम् » सेन्जी » चेत्तुपट्टु » देविगापुरम् » मण्डकोलत्तूर » करिगात्तूर » होते हुए **तिरुमलै** पहुंचते हैं I

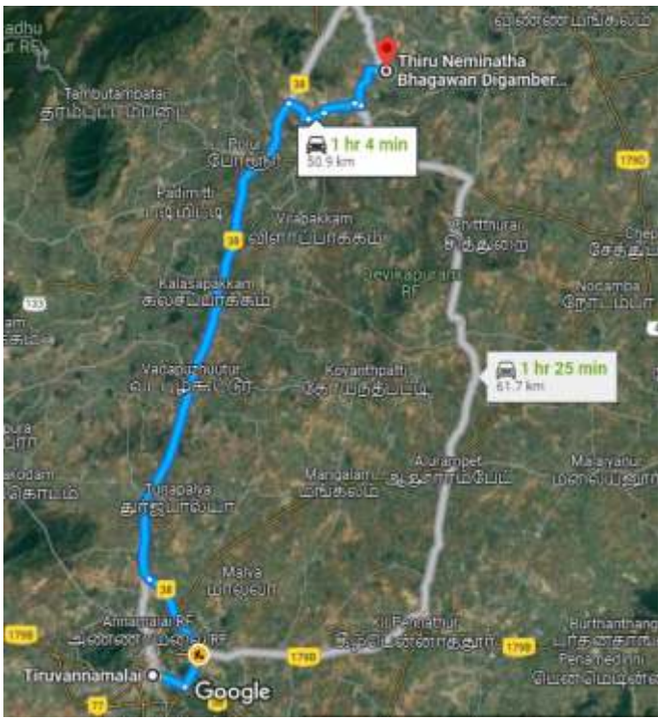

From Tiruvannamalai तिरुवन्नामलाई से आने वाले
तिरुवण्णामलै » पोलूर » करिगात्तूर » होते हुए **तिरुमलै** पहुंचते हैं I

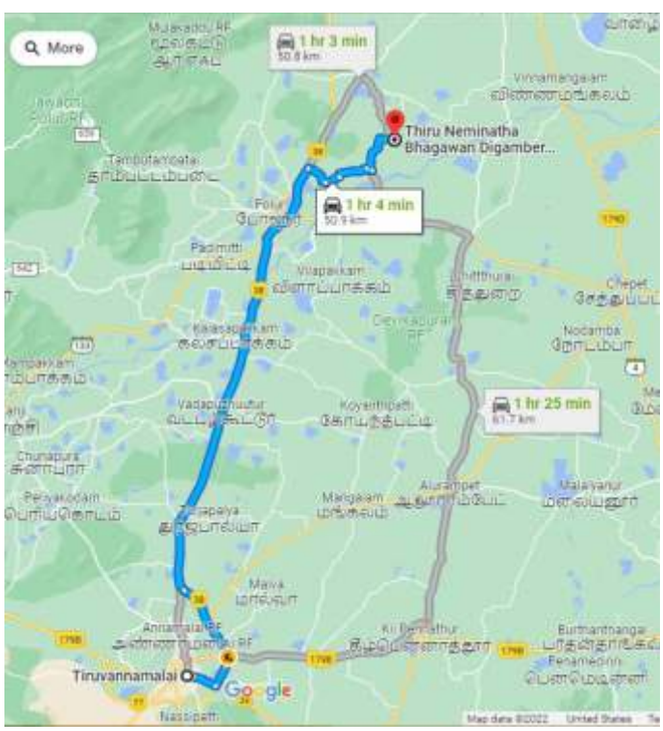

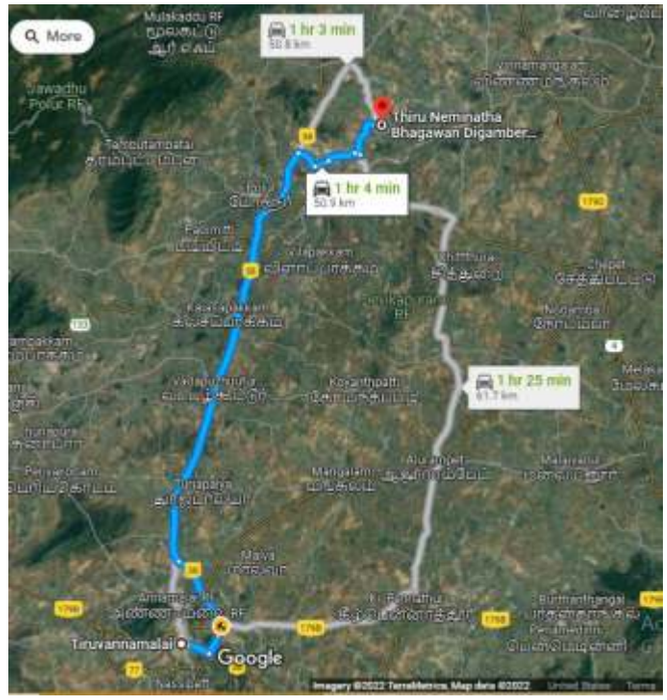

From Kanchipuram कांचीपुरम से आने वाले
कांचीपुरम् » मामण्डूर » चेय्यार » आरणी » कलंबूर » वडमादिमंगलम् » होते हुए तिरुमलै पहुंचते हैं I

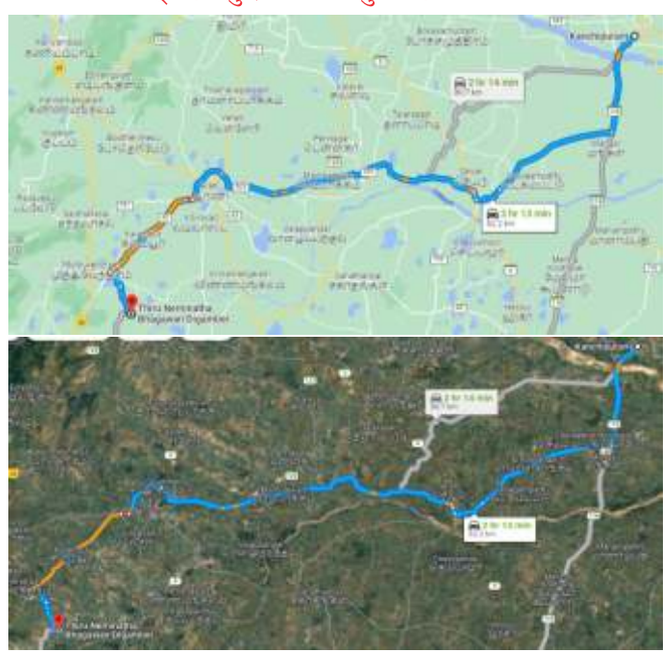

ऐसा क्या है यहाँ ?

सातवीं शताब्दी के पूर्व से ही यह क्षेत्र महान तीर्थ क्षेत्र रहता आया है। तब इस क्षेत्र को **'वैगावूर'** नाम से जाना गया। कई यति, साधनाएँ करने वाले इस क्षेत्र को चुना करते थे। यहाँ के गिरी (पर्वत) के ऊपर २२ वें तीर्थंकर

१००८ श्री नेमिनाथ भगवान की भव्य मूर्ति है जो एक ही अखंड चट्टान को खोदकर बनाया गया है। इस पर्वत पर श्री जी के सामने, उदित शांत वातावरण में बैठ जाएं तो उठने का मन ही नहीं करता I साथ ही समय व सांसारिक चिंतन आदि को अक्सर भक्त खो बैठते हैं।

(तिरुमलै पहाड़ आरणी के ओर से देखने पर)

(तिरुमलै पहाड़ पोलूर के ओर से देखने पर)

(तिरुमलै पहाड़ चढ़ाई के ओर से देखने पर)

अनेकों मुनियों की तपोभूमि व उनके साधना स्थल होने को यहाँ हम आज भी महसूस कर पाते हैं। हर साल जनवरी के महीने में तमिलनाडु के 'पोंगल उत्सव' का तीसरा दिन जो 'कानुम् पोंगल' के नाम से जाना जाता है, उस दिन विशेष मस्तकाभिषेक सदियों से श्री जी का होता है। जिसे देखने, हजारों भक्त उमड़ आते हैं। यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि अजैन बंधु भी हजारों की संख्या में यहाँ आते हैं और अभिषेक देखकर अपने आप को धन्य

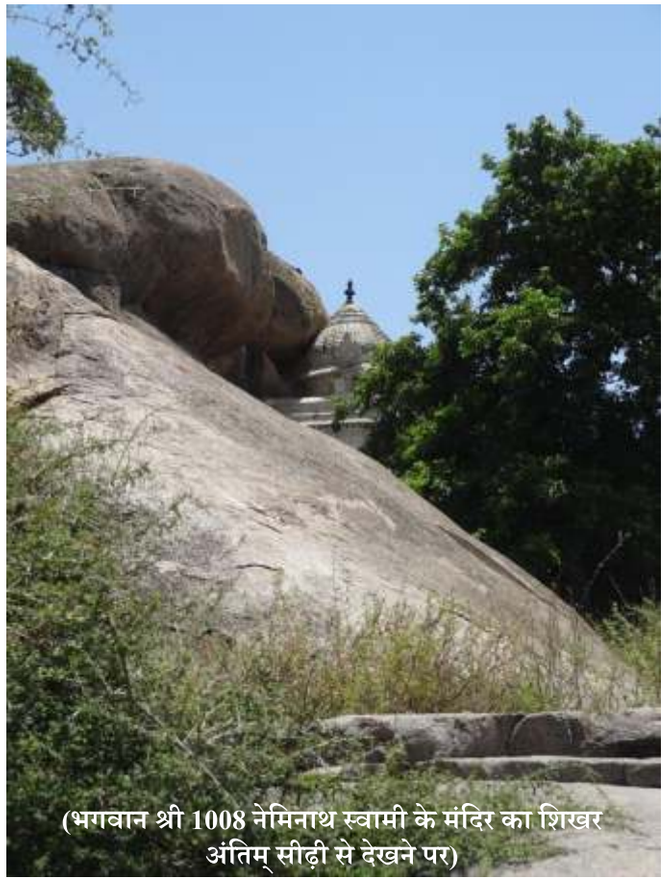

(भगवान श्री 1008 नेमिनाथ स्वामी के मंदिर का शिखर अंतिम् सीढ़ी से देखने पर)

मानते हैं। उनका मानना है कि श्री जी के गंधोदक से उनका सारा कष्ट दूर हो जाता है। श्री जी के दर्शन उन्हें शांति प्रदान करता है। लोग उस दिन श्री जी के अभिषेक के उपरांत गंधोदक को भर-भर उनके परिवार व बंधुजनों के लिए भी लेकर जाते हैं। यहाँ आने वाले अजैन भाइयों व बहनों को माँस त्यागने का उपदेश भी भट्टारक स्वस्ति श्री धवल कीर्ति महास्वामीजी के द्वारा दिया जाता है। कई अजैन लोग आजीवन माँस का त्याग कर देते हैं, यह क्षेत्र की महिमा है।

यह तो अब की बात है। जरा पुरातन महिमा के बारे में जानते हैं। हम सब इस बात से अवगत ही हैं कि श्री 108 विशाखाचार्य जी के नेतृत्व में श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला से 8000 मुनियों का विहार तमिलनाडु के ओर हुआ I जिससे स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि उस समय यहां जैनों की संख्या कितनी रही होगी कि 8000 मुनियों की व्यवस्था, आहारचर्या आदि करवाने के लिए सक्षम रहे होंगे। उसके बाद बहुवांश में जैनों को सूली पर चढ़ा कर मारा गया। खैर उस विषय पर हम चर्चा अब न करेंगे।

आचार्य श्री 108 विशाख के संघ में अंतिम श्रुतकेवली आचार्य श्री 108 भद्रबाहु स्वामी भी थे, इस बात से हम अवगत हों जिससे उस संघ की महानता व उस संघ का समय कितना पुराना था और महिमा, यह अपने मन में स्थित हों। जय हो उन आचार्यों के चरण कमलों को I आज भी इस विषय को सोचते, हम रोमांचित हो जाते हैं।

एक और महान आचार्य संघ का तमिलनाडु में आगमन तो दूसरी

(भगवान श्री 1008 नेमिनाथ स्वामी की दिव्य मूर्ति)

ओर पंच पांडवों ने अपने भाई कौरवों से जुए में हार कर, 14 वर्ष देश त्यागते हैं। यहाँ-वहाँ जंगलों में अपना निवास स्थल बनाकर एक उचित स्थान की तलाश में यहाँ के जंगलों में घूमते हैं। इसके बीच वर्षा समय सामने आ पहुंचता। अक्सर चातुर्मास के वक्त वे साधु सानिध्य में रहने को सौभाग्य स्वीकारते और चारों महीने उनके सेवा में संलग्न रहते थे। सहसा पांडवों को श्री शैलपुरी के जंगल, गुफा व गिरी को अपने लिए ठहरने का उचित स्थान समझकर चयन करते हैं और श्री संघ भी इस क्षेत्र में प्रवेश करके चातुर्मास वर्षायोग करने की प्रतिज्ञा लिए हैं, इस बात को जानकर पांडव-गण अत्यंत आनंदित होते हैं।

उस वक्त यह पुण्य क्षेत्र 'जयंकोण्ड चोल' राजा के मंडलों के अनेक शैल-तीर्थों में से एक था। जो 'मण्डैकुल' राज्य के पास स्थित था। इस क्षेत्र के "**वैगै तिरुमलै, एन्गुण इरैवण कुंड्रम्, श्रीपुरम्, श्रीशैलपुरम्, अर्हसुगिरी, पलकुंड्र कोट्टम्**" ऐसे अनेक विशेष नाम भी यहाँ-वहाँ उल्लेखित हैं। आज भी 'मंडकुल नाडु' बताया गया क्षेत्र 'मंड कोलत्तूर' नाम से यहाँ है जिसके पास ही यह क्षेत्र विद्यमान है। 'श्रीशैल माहत्म्यम्' के काव्य में लिखित एक काव्य-

….. श्रीशैल वासस्त गुहायां पञ्च पाण्डवाः
चातुर्मासं पूजयित्वा जिनबिम्बम् शिखामणिम्
चातुर्मासं तत्र नीत्वा द्रौपत्या सहपाण्डवाः
स्तुत्वार्चयित्वा तत्बिम्बम् …..

जिससे ज्ञात होता है कि यहाँ रहकर पांडवों ने मुनियों की सेवा, आहार दान आदि किए और उस वक्त यहाँ दर्शन हेतु कोई मंदिर या श्री भगवान की मूर्ति ना होने के कारण आज इस पर्वत पर विराजमान भगवान श्री 1008 नेमिनाथ स्वामी की मूर्ति चट्टानों को खोदकर पांडवों ने बनाया था। इस काव्य में भगवान श्री नेमिनाथ स्वामी के लिए 'शिखामणि' का नाम उल्लेख किया गया है। इससे पता चलता है कि भगवान श्री नेमिनाथ 'शिखामणि नाथ' नाम से भी जाने गए।

तिरुमलैप्पल्लियैच् चेवित्तिड नम्
तीविनै अगन्ड्रिडुमे

इतनी मार्मिकता को अपने में लिए इस मूर्ति का दर्शन मात्र ही सारे पाप को दूर करने में समर्थ है ऐसा यह काव्य कहता है।

आगे और क्या है इस क्षेत्र में? आइए या तो दर्शन करके इस विषय को जानेंगे। कदाचित न हो सके तो अगले लेख में और बातों से उल्लास के साथ भाववंदना करेंगे।

जय बोलिए नेमिनाथ भगवान की - जय हो !
जय हो ! जय हो !

जमीन से प्राप्त जैन प्रतिमा

म.प्र के धार जिले के सादुलपुर तालुका में स्थित बीजूर गांव में खुदाई के दौरान प्राचीन दिगम्बर जैन प्रतिमा प्राप्त हुई । गांव में कोई जैन परिवार नहीं है, जैन समाज को स्थानिक समाज ने प्रतिमा नहीं दी फिलहाल प्रतिमा पुलिस थाने में सुरक्षित है।

हीरापुर के खेत में मिली प्राचीन जिन प्रतिमा

दिनांक 30 नवंबर 2022 को शाम 5 बजे हीरापुर, मध्यप्रदेश में खेत की जुताई के दौरान खेत में प्राचीन जिन प्रतिमा मिली है। रैकवार समाज की मुलिया बाई रैकवार, लल्लू,, रमेश रैकवार और मोहन प्रजापति अपने खेत में कार्य कर रहे थे। जुताई के दौरान उन्हें पत्थर अटक रहा था। खेत से अलग करने के लिए रैकवार परिवार ने उसे बाहर निकाला तो वह एक जिन प्रतिमा थी। सूचना प्राप्त कर गांव के बहुत से लोग वहां एकत्रित हो गये। इस परिवार ने उसे पानी से साफ करके कहा वे हमेशा इसकी पूजा करेंगे, उन्हें देवता मिले हैं। किन्तु जब देखा कि यह तीर्थकर महावीर की प्रतिमा है तब जैन समाज ने उसे समाज को सौंपने का निवेदन किया। पहले तो रैकवार परिवार प्रतिमा देने को तैयार नहीं हुआ, किन्तु उन्हीं की समाज के बुजुर्ग लोगों ने समझाया की यह तो महावीर की मूर्ति है वे लोग क्या करेंगे, तब रैकवार परिवार ने हीरापुर जैन समाज के श्री अभय जैन, श्री गुलाब चंद्र जैन, श्री ऋषभ जैन, श्री अमर चंद जैन, श्री राजू जैन, श्री पवन जैन, श्री सौरभ बड़े आदि को यह प्रतिमा सौंप दी।

पंण्डित वीरेन्द्र कुमार जैन शास्त्री हीरापुर ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रतिमा को स्थानीय जैन मंदिर में स्थापित कर दिया गया है। पाषाण की पद्मासन, कमलासनस्थ इस प्रतिमा के पादपीठ पर सिंह का लांछन है।

मनोज कुमार जी आईएएस सचिव पर्यटन मंत्रालय के साथ श्री एमपी अजमेरा जी पूर्व आईएएस अधिकारी एवं शिखर संस्कार के अध्यक्ष

पावन पर्वत पारसनाथ पर अनधिकृत चल रही दुकानों को हटाने के सम्बन्ध में झारखण्ड सरकार के पीसीसीएफ सर्वोच्च वन विभाग अधिकारी श्री राजीव रंजन जी आईएफसी के साथ श्री एम.पी. अजमेरा की विस्तार से चर्चा एवं निर्णय –पहाड़ से हटाना है तथा नीचे बसाना है सरकार के साथ सहयोग करना है ताकि पवित्र पहाड़ की पवित्रता बनी रहे तथा इन लोगों के जीवन में भी सुधार हो | पहाड़ पर वृक्ष लगाने एवं पर्यावरण की सुरक्षा पर सकारात्मक वार्ता अजमेरा जी के साथ हुई |

भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल का दौरा

आज भोजपुर क्षेत्र का भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल द्धारा दौरा किया गया मध्यांचल के अध्यक्ष डी.के.जैन पवन जैन, योगेश जैन के साथ और वहां की कमेटी से अमिताभजी मनयाँ जैन, विनोदजी जैन इंजीनियर, विमलजी जैन राजदीप, विनोदजी जैन मंडीदीप, सुरेंद्र जैनजी छोटू, अतुलजी जैन भोजपुरपर आदि के साथ विस्तृत चर्चा की गई। श्रीमान मन्याजी ने इस अवसर पर कहां कि मध्यांचल अध्यक्ष अपनी टीम के साथ पधारे बहुत अच्छा लगा और मुझे उम्मीद ही नहीं पूरा यकीन है कि आप के सहयोग, संरक्षण, सलाह मशवरे, से हम और आप सब मिलकर क्षेत्र का विकास करेंगे और हमारा क्षेत्र एक शानदार क्षेत्र बनकर तैयार होगा इसी उम्मीद के साथ एक बार पुनः आपका बहुत-बहुत आभार। मध्यांचल अध्यक्ष द्वारा भोजपुर कमेटी को आश्वस्त किया की हम क्षेत्र के विकास में आपके साथ पग से पग मिलाकर सहयोग करेंगे साथ ही भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी के.राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिखरचंद जी पहाडियांजी और राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोषजी पेंढारीजी तक आपके ज्ञापन पर विस्तृत चर्चा कर सहयोग करवाने बाबद निवेदन जरूर करेंगे।

करीमनगर में जैन धर्म

करीमनगर: कोटला नरसिम्हुलापल्ली गाँव के निवासी और इतिहासकार चाहते हैं कि राज्य सरकार इस क्षेत्र में नियमित रूप से पाई जाने वाली ऐतिहासिक कलाकृतियों का पता लगाने के लिए गाँव में खुदाई करे।

कुछ दिन पहले, जैन तीर्थंकर (24वें तीर्थंकर) वर्धमान महावीर की एक मूर्ति एक किसान को तब मिली जब वह अपनी जमीन पर खेती कर रहा था। इसके बाद ग्रामीणों ने इसके ऐतिहासिक महत्व को उजागर करने के लिए क्षेत्र में खुदाई कराने की आवश्यकता पर जोर देना शुरू कर दिया है। इतिहासकार भी सरकार से हस्तक्षेप की मांग कर रहे हैं।

इतिहासकार संकेपल्ली नागेंद्र शर्मा ने कहा कि 'मूर्तियों से ऐसा प्रतीत होता है कि इस क्षेत्र के गांवों में हिंदू और जैन सांप्रदायिक सद्भाव में एक साथ रहते थे'। प्राचीन काल के दौरान, इस क्षेत्र पर नंद और सातवाहन साम्राज्यों का शासन था, सातवीं शताब्दी के दौरान, वेमुलावाड़ा के चालुक्यों, राष्ट्रकूटों के शासन के बाद, एक समय में, जैन धर्म इस क्षेत्र में फला-फूला। यदि पुरातत्व विभाग खुदाई करता है, तो अधिक ऐतिहासिक संपदा का पता चलेगा।

खेतों में जैन मुनि की मूर्ति मिलने के बाद हैदराबाद और यहां तक कि कर्नाटक के जैन श्रद्धालुओं ने इस क्षेत्र का दौरा किया। श्रद्धालुओं ने गांवों में मंदिर बनने की इच्छा जताई थी। वर्तमान में, इस क्षेत्र में पाई जाने वाली जैन मूर्तियाँ, जिनमें पार्श्वनाथ और महावीर शामिल हैं, को गाँव के सरपंच के नियंत्रण में एक कमरे में रखा गया है।

- जैन धर्म तीर्थ यात्रा से साभार

श्री दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र तपोभूमि उज्जैन में भारत जोड़ो यात्रा के दौरान कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष श्री राहुल गांधी जी ने मुनि प्रज्ञासागर जी के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया

भारतजोड़ो यात्रा का नेतृत्व कर रहे कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राहुल गांधी अपनी मध्यप्रदेश यात्रा के दौरान भोपाल पहुंचें जहाँ उन्होंने भगवान महावीर की तपोभूमि उज्जैन में जिन दर्शन एवं विराजमान मुनि श्री प्रज्ञासागर जी महाराज के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। राहुल गाँधी के साथ कांग्रेस के शीर्ष नेता उपस्थित रहे। मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री कमलनाथ जी ने भी महाराज श्री से आशीर्वाद ग्रहण किया। क्षेत्र कमेटी ने पधारे सभी अथितियों का स्वागत सत्कार कर सम्मान किया।

अतिशय क्षेत्र महावीर जी में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव एवं अतिशयकारी भगवान महावीर (टीलेवाले बाबा) की प्रतिमा का महामस्तकाभिषेक कार्यक्रम संपन्न

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के गौरवशाली पात्रों में भगवान के माता पिता का पुण्यार्जन श्रीमती किरण देवी- श्री राजकुमार सेठी, सौधर्म इन्द्र श्री रोहन-अमिता कटारिया, चक्रवर्ती राजा श्री सुरेश-शान्ता पाटनी, धनपति कुबेर श्री दीपक-विनिता सेठी, यज्ञनायक श्रीपाल – कुसुम चूड़ीवाल, ईशान इन्द्र श्री राजेश - विमला शाह, सनत कुमार इन्द्र श्री पवन- प्रीति गोधा, माहेन्द्र इन्द्र श्री तीर्थेश-प्रियंका छाबड़ा, राजा श्रेणिक श्री अंकित -नैना पाटनी, ब्रह्म इन्द्र श्री महेन्द्र कुमार-अंजना धाकडा, ब्रह्मेत्तर इन्द्र श्री अनिल-अंजना जैन रहे।

टीले से निकली भगवान महावीर की मूंगावर्णी अतिशयकारी प्रतिमा का जयकारों के बीच श्रद्धालुओं ने किया महामस्तकाभिषेक

श्री महावीरजी में ध्वजारोहण कर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का मुख्यमंत्री ने किया शुभारंभ-धूमधाम से निकली घट यात्रा

21 वीं सदी में भगवान महावीर का प्रथम महामस्तकाभिषेक महोत्सव के अन्तर्गत भव्य पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव गुरुवार, 24 नवम्बर को दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी में विशाल स्तर पर प्रारम्भ हुआ। वात्सल्य वारिधि आचार्य वर्धमान सागर महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में आयोजित इस महामहोत्सव का राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने जयकारों के बीच ध्वजारोहण कर शुभारंभ किया। इससे पूर्व कटला प्रांगण से विशाल घटयात्रा जुलूस निकाला गया। जिसमें सबसे आगे घोड़े पर पचरंगा ध्वज लिए बालक, जिनवाणी का ऐरावत हाथी, धर्म चक्र, दो रथ जिस पर श्री जी विराजमान थे, जयपुर से आया भगवान महावीर का 2550 वा निर्वाणोत्सव का रथ, बैण्ड बाजें, बग्घियां, हाथी जिसपर इन्द्र-इन्द्राणी विराजमान थे एवं सैकड़ों महिलाएं जो सिर पर मंगल कलश लेकर चल रही थी। कटले के बाहर तक आचार्य वर्धमान सागर महाराज ससंघ एवं घटयात्रा जुलूस में आचार्य अमित सागर महाराज ससंघ सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु गण शामिल हुए। घट यात्रा मुख्य पाण्डाल पहुंचकर समाप्त हो गई। इस मौके पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने हैलीपेड से सीधे मुख्य मंदिर पहुंचकर भगवान महावीर के दर्शन कर प्रदेश में खुशहाली और सुख, समृद्धि की कामना की। पधारे मुख्यमंत्री जी का कमेटी द्वारा सम्मान किया गया तत्पश्चात श्री गहलोत ठोलिया धर्मशाला पहुंचे जहां बनजी ठोलिया ट्रस्ट की ओर से सुदीप ठोलिया, सुनील बख्शी आदि ने सम्मान किया। इसके बाद श्री गहलोत सीधे कार्यक्रम स्थल पर पहुंचे जहां उन्होंने जयकारों के बीच महोत्सव का ध्वजारोहण कर शुभारंभ किया।

भगवान महावीर के सन्देश आज भी प्रासंगिक : मुख्यमंत्री अशोक गहलोत

ध्वजारोहण के बाद विशाल पाण्डाल में आयोजित धर्म सभा में मुख्यमंत्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज देश दुनिया को भगवान महावीर के सत्य, अहिंसा अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य आदि सिद्धांतों की आवश्यकता है। महात्मा गांधी ने भगवान महावीर के सिद्धांतों एवं विचारों से प्रभावित होकर देश को आजाद करा दिया था। शांति, सद्भावना, अहिंसा से मानव कल्याण के साथ देश प्रदेश का विकास होगा। जहा सत्य अहिंसा है वहा ईश्वर का निवास होता है। उन्होंने अपनी प्राइमरी स्कूल शिक्षा को याद करते हुए कहा कि मैं प्राइमरी तक जैन स्कूल में पढ़ा हूं, जहा के संस्कार आज भी मुझे याद है। भारत की प्राचीन संस्कृति का मुकाबला कोई नहीं कर सकता है। आचार्य वर्धमान सागर महाराज के आशीर्वचनों को अपने जीवन में आत्मसात करने पर हमारा जीवन सही मायने में धन्य होता है। महाराज श्री के संदेशों से मेरा यहा आना सार्थक हो गया है। महोत्सव के ध्वजारोहण का सौभाग्य मुझे मिलना मेरे जीवन की बड़ी सौगात है। ध्यान केन्द्र की मूर्तियां देखकर मैं

अभिभूत हो गया। शायद देश में ऐसा संग्रहालय कही नहीं होगा। उन्होंने कहा कि धार्मिक कार्यक्रम है मैं धर्म तक ही सीमित रहना चाहता हूं। मानव, मानव की सेवा करें, आपस में जातियों में नहीं बंटे यही प्राणी मात्र का कल्याण होगा। महावीर जी के बारे में बताया गया कि महावीर जयंती पर वाल्मीकि, मीणा, गूर्जर सभी जातियों के लोग बिना किसी भेदभाव के जुलूस में सहभागिता निभाकर सामाजिक सोहार्द्र की मिसाल कायम करते हैं जो यहा की विशेषता है। नई पीढ़ी तक यह संदेश पहुचना चाहिए। राज्य सरकार ने अहिंसा शांति विभाग इसीलिए बनाया है ताकि भगवान महावीर, भगवान बुद्ध सहित सभी महापुरुषों के संदेश नई पीढ़ी तक पहुंचे।

आचार्य वर्धमान सागर महाराज जी ने आशीर्वचन देते हुए कहा कि धार्मिक अनुष्ठान एवं धार्मिक क्षेत्र में प्रदेश की सरकार का सहयोग धर्म कार्य है। धर्म से मंगल और सुख शांति प्राप्त होती है। भगवान महावीर सहित चौबीस तीर्थंकरों ने धर्म की ज्योति जलाई है अतः सभी जीवों को धर्म धारण करना चाहिए। पांच महाव्रत सबका कल्याण करने वाले हैं। आत्मिक सुख धर्म से ही प्राप्त होता है। आत्मिक सुख प्राप्त करने के लिए भौतिक सुखों का त्याग करना पड़ता है। यह महोत्सव सबका मंगल करेगा मैं ऐसी भावना भाता हूं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री जी इस क्षेत्र को अहिंसा क्षेत्र घोषित करे जिससे देश में सुख शांति हो। इस मौके पर पीडब्ल्यूडी मंत्री भजन लाल जाटव, पर्यटन मंत्री विश्वेन्द्र सिंह, पंचायती राजमंत्री रमेश मीना, सवाईमाधोपुर विधायक दानीश अबरार, हिण्डौन विधायक भरोसे लाल जाटव, करौली विधायक लाखन सिंह, दिनेश खोडनिया सहित कई राजनेता और प्रशासनिक अधिकारी मंच पर उपस्थित थे। कमेटी की ओर से श्री विवेक काला, श्री शांति कुमार जैन, श्री सी.पी. जैन, श्री उमरावमल संघी, श्री

सुभाष चन्द जैन, श्री पूनमचंद शाह, श्री सुरेश सबलावत, श्री राकेश सेठी, श्री पी.के. जैन, श्री देवेन्द्र अजमेरा, श्री भारत भूषण जैन आदि ने तिलक, माला, शाल, प्रतीक चिन्ह भेंट कर स्वागत किया गया। इससे पूर्व मुख्यमंत्री गहलोत एवं सभी गणमान्य श्रेष्ठियों ने आचार्य श्री व सभी साधु संतों को श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। अध्यक्ष श्री सुधांशु कासलीवाल ने स्वागत उदबोधन देते हुए सरकार व स्थानीय प्रशासन का विकास कार्यों के लिए आभार व्यक्त किया। महोत्सव समिति के महामंत्री महेन्द्र कुमार पाटनी ने अन्त में आभार व्यक्त किया। इस मौके पर क्षेत्र कमेटी द्वारा प्रकाशित काफी टेबल बुक एवं महामस्तकाभिषेक स्मारिका का विमोचन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा किया गया।

इस अवसर पर आर.ए.एस श्री राकेश जैन, श्री अशोक जैन, श्री सुरेश सबलावत, श्री सुरेश जैन बांदीकुई, पं.हसमुख जैन धरियावद आदि उपस्थित थे। इसके साथ ही श्री दिगम्बर जैन आदर्श महिला महाविद्यालय समिति श्री महावीरजी द्वारा शुरु की गई बालिका शिक्षा समृद्धि योजना के बहुरंगीय पोस्टर का विमोचन मुख्यमंत्री श्री गहलोत ने किया। समिति के अध्यक्ष श्री चन्द्र प्रकाश पहाड़ियां, श्री उपाध्यक्ष ज्ञानचंद झांझरी, मंत्री श्री उजास जैन, संयुक्त मंत्री डॉ. पदमचन्द जैन, कार्यकारिणी सदस्य एवं समाचार जगत के प्रधान संपादक श्री शैलेन्द्र गोधा सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे। कमेटी के शिरोमणि संरक्षक श्री अशोक पाटनी, गौरवाध्यक्ष श्री एन.के. सेठी, क्षेत्र कमेटी अध्यक्ष श्री सुधांशु कासलीवाल, कार्याध्यक्ष श्री विवेक काला, महामंत्री श्री महेन्द्र कुमार पाटनी आदि मंचासीन थे।

महावीर जी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव के मौके पर डाक विभाग ने जारी किया विशेष कवर आवरण एवं महावीर जी डाकखाने पर विशेष मोहर

महोत्सव समिति के प्रचार संयोजक विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि सोमवार को आचार्य वर्धमान सागर महाराज ससंघ एवं आचार्य विमल सागर महाराज के सानिध्य में इस स्पेशल आवरण कवर,माई स्टेम्प का विमोचन किया गया। इस मौके पर श्री महावीरजी डाकखाने की स्थाई चित्रात्मक मोहर भी जारी की गई। मोहर पर श्री महावीर जी मंदिर का चित्र अंकित है। स्पेशल कवर आवरण पर टीले से निकली हुई मूंगावर्णी अतिशकारी भगवान महावीर की फोटो तथा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में प्रतिष्ठित 24फीट उतंग खड्गासन भगवान महावीर की प्रतिमा का चित्र छपा हुआ है। इस आवरण कार्यक्रम का संयोजन श्री विवेक काला, श्री धर्मचन्द पहाड़ियां, श्री सुरेश सबलावत एवं फिलातलिक सोसायटी ऑफ़ राजस्थान ने किया है।

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री सुधांशु कासलीवाल, ने बताया कि इस अनावरण एवं विमोचन समारोह में महोत्सव समिति के शिरोमणि संरक्षक श्री अशोक पाटनी आर.के. मार्बल्स किशनगढ, उपाध्यक्ष श्री सी.पी. जैन जयपुर, महामंत्री श्री महेन्द्र कुमार पाटनी, चक्रवर्ती श्री राजा सुरेश-शान्ता पाटनी किशनगढ एवं अन्य कमेटी सदस्य, महोत्सव समिति सदस्यों सहित बड़ी संख्या में गणमान्य श्रेष्ठीजन शामिल हुए।

आचार्य कुंदकुंद भगवान की जन्मभूमि कोंनकोंडला
तीर्थक्षेत्र कमेटी दक्षिण प्रान्त के अध्यक्ष श्री दिनेश सेठी ने किया क्षेत्र निरिक्षण

आंध्रप्रदेश राज्य अनंतपुर जिले के कोनकोंडला गांव में आचार्य श्री कुंदकुंद भगवान् जी का जन्मस्थल है इस स्थल का विकास करने के लिए भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने पुरातत्व विभाग से अनुमति ली है, दिनांक १५-११-२०२२ को तीर्थक्षेत्र कमेटी के दक्षिण प्रान्त (तमिलनाडू, केरल, आंध्रप्रदेश & पौण्डिचेरी अंचल) के अध्यक्ष श्री दिनेश सेठी जी कुंदकुंद आचार्य जी के जन्मस्थल कोनकोंडला पधारे और पुरातत्व विभाग असिस्टेंट डायरेक्टर रजिता जी, तीर्थक्षेत्र कमेटी कार्यकर्ता श्री सुरेश जैन से मिलकर कोनकोंडला के जिनमंदिर और विकास के बारे में चर्चा की। पहाड़ पर जिनमंदिर में विराजमान किया।

तीर्थंकर भगवान का मंदिर निर्माण करना, मूर्तियों का वज्रलेपन करवाना, मंदिर के पीछे जम्बूद्वीप नक्षे को पूरी तरह सुरक्षित करना और पहाड़ पर रेखा चित्र को बारिश-गर्मी से संरक्षण के लिए पूरी तरह मंदिर बनवाना एवं पहाड़ पर चढ़ने के लिए सीढ़ी आदि पर ग्रिल बनाना, पहाड़ के नीचे कुंदकुंद आचार्य भगवान जी का एक स्मारक मंदिर बनवाना, यात्रियों के लिए धर्मशाला, ध्यानमंदिर निर्माण करवाना, पूरी स्थल सर्वे कर पूरी स्थल संरक्षण के लिए तार फेंसिंग करवाना साथ में वृक्षारोपण करवाना। पहाड़ पर पहुँचने के लिए मुख्यमार्ग से पहाड़ सीढ़ी तक जाने के लिए अभी तक कोई रास्ता नहीं है, पहाड़ पर पहुँचने के लिए पीछे से रास्ता है जिससे पहाड़ का चक्कर लगाकर आना पड़ता है, सड़क के बाजू में पहाड़ सीढ़ी तक जाने के लिए प्राइवेट स्थल है।

कोनकोंडला गांव के प्रमुख लोगों से बात कर पहाड़ तक पहुँचने के लिए रास्ते के बारे में चर्चा कर अनुमति लेना आवश्यक है इस स्थल के विषय पर तुरंत गांव के लोगों से मिल कर अनुमति लेकर सूचित करने के लिए श्री सुरेश जैन को निर्देशित किया है।

- दिनेश सेठी

भारत के राष्ट्रपति महामहिम माननीय द्रोपदी मुर्मू जी क़ो अंतर्मना महापारणा महाप्रतिष्ठा महामहोत्सव के लिए दिया विशिष्ट आमंत्रण

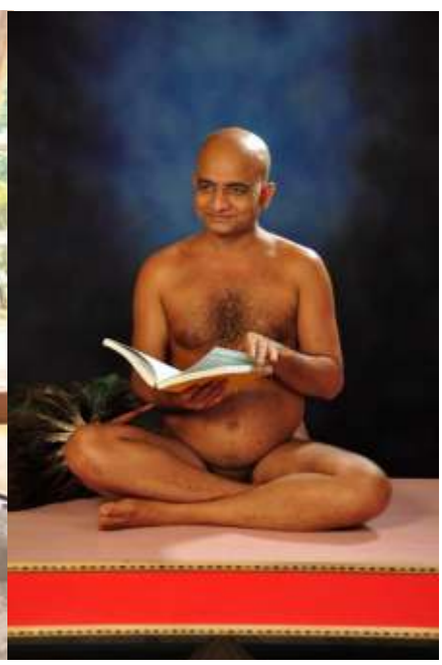

अंतर्मना महापारणा महाप्रतिष्ठा के भव्याति भव्य महामहोत्सव के लिए परम पूज्य साधना महोदधी उभयमासोपवासी अंतर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्नसागर जी महाराज का विशेष आशीर्वाद और महामहोत्सव के अतिविशिष्ट अतिथि के रूप मे भारत के राष्ट्रपति महामहिम माननीय द्रोपदी मुर्मू जी क़ो अपना सानिध्य प्रदान करने के लिए समिति की और विशिष्ट आमंत्रण प्रदान किया गया। आदरणीय महामहिम ने आमंत्रण क़ो सहर्ष स्वीकार किया।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा सम्मेदशिखर जी तीर्थरक्षा के लिए भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन केन्द्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव, राज्य मंत्री अश्विनी कुमार चौबे, झारखण्ड राज्य के मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन एवं उनके प्रमुखों को दिया ज्ञापन

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिखरचंद पहाड़िया एवं राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी ने सम्मेदशिखर जी को पर्यटनस्थल व पारसनाथवन्य जीव अभयारण बनाए जाने के विरोध में भारतसरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन केन्द्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव, राज्य मंत्री अश्वनी कुमार चौबे, विशेष सचिव एवं डीजी वन महानिदेशक चन्द्र प्रकाश गोयल, सचिव-लीना नंदन, झारखण्ड राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को पत्र लिखकर ज्ञापन दिया है तथा इस पत्र में श्री सम्मेदशिखर की पवित्रता, पावनता व महत्ता बताते हुए शिखरजी तीर्थ को पवित्र जैन तीर्थ घोषित करने की अपील की है।

ईमेल Email tirthvandana@gmail.com भाषण Ext. 1902 दूरभाष Phone No. 022-23878293

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

Bharatvarshiya Digambar Jain Tirthkshetra Committee

भारतीय सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम 1860 के अधीन पंजीकृत सं. 570/1930
बंबई सार्वजनिक न्यास अधिनियम 1950 के अधीन पंजीकृत सं. एफ-10/1952

Date - 12-12- 2022

To,

Shri Bhupendra Yadav,
Cabinet Minister,
Ministry of Environment, Forest & Climate Change,
Indira Paryavaran Bhawan, Jorbagh Road,
New Delhi

Subject: Gazette Notification No. 2541 Dated 05-08-2019

Reference: Recognition of *Sammed Shikhar Ji* as *Tirth Kshetra* (Pilgrimage Site)

Sir,

This representation is a very humble request from the Digamber Jain Community seeking modification of the subject Gazette Notification dated 05-08-2019 vis-à-vis "Parasnath Wildlife Sanctuary".

The grievance of the Digamber Jain Community emanates from the following contents of the said Notification:

(a) Permission for activities such as "*Small Scale Industries Not Causing Pollution*" [Paragraph No. 3 (1) (iii)]

(b) Permission for "*Cottage Industries Including Village Industries, Convenience Store & Local Amenities Supporting Eco-Tourism Including Home Stay*" [Paragraph No. 3 (1) (iv)]

महामंत्री कार्यालय: द्वितीय तल, हीराबाग, कस्तुरबा गांधी चौक, सीपी टैंक, मुंबई - 400004 (भारत)
Secretary General's Office: 2nd Floor, Kasturba Gandhi Chowk, CP Tank, Mumbai - 40004 (Bharat)
आधिकारिक जालस्थल Official Website: www.tirthkshetracommittee.com

ईमेल Email tirthvandana@gmail.com भाषण Ext. 1902 दूरभाष Phone No. 022-23878293

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

Bharatvarshiya Digambar Jain Tirthkshetra Committee

भारतीय सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम 1860 के अधीन पंजीकृत सं. 570/1930
बंबई सार्वजनिक न्यास अधिनियम 1950 के अधीन पंजीकृत सं. एफ-10/1952

(c) Permission for "Promoted Activities" [Paragraph No. 3 (1) (v)]

(d) Tourism or Eco-Tourism Activities [Paragraph No. 3 (3)]

(e) Permission for Non-Polluting Industries in Eco-Sensitive Zone [Paragraph No. 3 (16)]

(f) Commercial establishment of Hotels & Resorts [Paragraph No. 4 (b) (9)]

Sammed Shikhar Ji popularly known as "Parasnath Ji" situated in District Giridh (Jharkhand) is the most pious, revered, sacred, holy and important Jain Shrine. In other words, it can be said to be the very 'fountainhead' of Jainism. The importance of *Sammed Shikhar Ji* has been elaborated in the eponymous scripture *Sammed Shikhar Mahatmaya*.

In Jainism, the *Sammed Shikhar Ji* has been recognized as the land of salvation. The 2nd *Tirthankara* Lord Ajitanath was the first to attain salvation from *Sammed Shikhar Ji*. Since then, 20 out of 24 of our *Tirthankaras* have attained salvation from *Sammed Shikhar Ji*. Besides our revered *Tirthankaras*, millions of Jain Saints and Ascetics have also attained salvation from *Sammed Shikhar Ji*.

It is believed by Jains that whosoever visits and worships at *Sammed Shikhar Ji* with penance in mind and pure heart is able to wash-off all past sins and is able to escape the endless process of rebirth. It is also widely believed that whosoever pays obeisance at *Sammed Shikhar Ji* avoids going to hell or rebirth as animal or bird. Hence, it is the fervent desire of every Jain to visit and worship at *Sammed Shikhar Ji* as many times as possible in his / her lifetime to attain salvation. Accordingly, millions of Jains visit *Sammed Shikhar Ji*

महामंत्री कार्यालय: द्वितीय तल, हीराबाग, कस्तुरबा गांधी चौक, सीपी टैंक, मुंबई - 400004 (भारत)
Secretary General's Office: 2nd Floor, Kasturba Gandhi Chowk, CP Tank, Mumbai - 40004 (Bharat)
आधिकारिक जालस्थल Official Website: www.tirthkshetracommittee.com

ईमेल Email
tirthkshetrasevaa@gmail.com
भवन Ext. 1002
दूरभाष Phone No.
022-23076293

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

Bharatvarshiya Digambar Jain Tirthkshetra Committee

भारतीय सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम 1860 के अधीन पंजीकृत सं. 570/1930
बंबई सार्वजनिक न्यास अधिनियम 1950 के अधीन पंजीकृत सं. एफ-10/1952

Sammed Shikhar Ji which blemish its religious sanctity besides causing immense pain and hurt to the Jains all over the word. Picnics and trekking activities are being organized. Young people are openly indulging in obscene, vulgar and immoral acts. Non-vegetarian food, alcohol, tobacco is being openly consumed at *Sammed Shikhar Ji*. All such activities which are contrary to the tenets of Jainism are in essence an encroachment on the religious rights of the Jains as enshrined and protected under Article 25 & 29 of the Constitution of India.

At any given point of time, hundreds of Jain *Sadhus, Sadhvis, et cetera* are present in Madhuban for penance, austerity, pilgrimage, mortification *et el*. The degradation of the religious sanctity of *Sammed Shikhar Ji* causes immense pain to pilgrims and saints alike.

In conspectus of the continuously deteriorating conditions, it has become of paramount importance to preserve and conserve the religious inviolability and purity of *Sammed Shikhar Ji*. For this it should be officially declared and recognized as a as a Tirth Kshetra (Pilgrimage Site) on the lines of Ayodhya, Mathura, Kashi Vishwanath, Varanasi, Vaishno Devi *et cetera*.

A prohibited area should be earmarked around *Sammed Shikhar Ji* in which there should be absolute ban on sale and consumption of non-vegetarian food, alcohol and tobacco products. All efforts to promote *Sammed Shikhar Ji* as a tourist spot, trekking spot, picnic spot *et cetera* should be completely ceased.

We can give you an assurance that except the activities stated supra in the Gazette Notification of 05-08-2019, which are obnoxious and sacrilegious to Jainism, the Digambar Jain Community will extend you their wholehearted support and cooperation in preservation and

महामंत्री कार्यालय: द्वितीय तल, ईतवारा, कस्तूरबा गांधी चौक, सीपी टैंक, मुंबई - 400004 (भारत)
Secretary General's Office: 2nd Floor, Kasturba Gandhi Chowk, CP Tank, Mumbai - 40004 (Bharat)
आधिकारिक जालस्थल Official Website: www.tirthkshetracommittee.com

ईमेल Email
tirthkshetrasevaa@gmail.com
भवन Ext. 1002
दूरभाष Phone No.
022-23076293

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
Bharatvarshiya Digambar Jain Tirthkshetra Committee
भारतीय सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम 1860 के अधीन पंजीकृत सं. 570/1930
बंबई सार्वजनिक न्यास अधिनियम 1950 के अधीन पंजीकृत सं. एफ-10/1952

conservation of "Parasnath Wildlife Sanctuary" and its biodiversity and ecology.

At the end it is a heartfelt prayer of the entire Jain Community which looks towards you as a beacon of hope, that this representation will be considered in right earnest and an affirmative decision will be taken at the earliest for which the Jain Community will forever be grateful.

Publication of a modified notification removing the activities stated supra, duly issued by your Ministry, will go a long way in assuaging the hurt religious sentiments of the Digamber Jain Community. A modified notification will also allay any apprehensions regarding the commercialization of "Parasnath Wildlife Sanctuary" and its adjoining areas and their promotion as a tourist spot.

Thanking you.

Your Faithfully,

Shikharchand Pahania	*Santosh Jain Pendhari*
President	**Hon. General Secretary**
Mo.- 9320064071	Mo.- 9822225911

Copy To:

(1) Shri Ashwini Kumar Choubey,
Minister of State,
Ministry of Environment, Forest & Climate Change

(2) Ms Leena Nandan,
Secretary,
Ministry of Environment, Forest & Climate Change

(3) Shri Chandra Prakash Goyal,
Director General of Forest & Special Secretary,
Ministry of Environment, Forest & Climate Change

महामंत्री कार्यालय: द्वितीय तल, ईतवारा, कस्तूरबा गांधी चौक, सीपी टैंक, मुंबई - 400004 (भारत)
Secretary General's Office: 2nd Floor, Kasturba Gandhi Chowk, CP Tank, Mumbai - 40004 (Bharat)
आधिकारिक जालस्थल Official Website: www.tirthkshetracommittee.com

ईमेल Email
tirthkshetrasevaa@gmail.com
भवन Ext. 1002
दूरभाष Phone No.
022-23076293

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
Bharatvarshiya Digambar Jain Tirthkshetra Committee
भारतीय सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम 1860 के अधीन पंजीकृत सं. 570/1930
बंबई सार्वजनिक न्यास अधिनियम 1950 के अधीन पंजीकृत सं. एफ-10/1952

every year for religious pilgrimage. Jain Pilgrims cover a distance of 27 Kilometres from Maduban-Parasnath Hill Top-Madhuban in roughly 12 – 15 hours during their pilgrimage. Jain Pilgrims travel barefoot, in plain cotton clothes and avoid eating, spitting, urinating or defecating during this journey to maintain the religious sanctity and purity of *Sammed Shikhar Ji*. These pilgrimages take place throughout the year even in the harshest of weathers through a very strenuous, laborious and difficulty pathway.

It is, pertinent to submit that every year nearly five to six lakh Jains visit *Sammed Shikhar Ji*. There are about 30 dharamshalas in Madhuban which cater to these pilgrims. The direct and indirect contribution of the Jain pilgrims to the economy of State of Jharkhand is several hundred crores every year.

"Ahimsa" is one of the fundamental tenets of Jainism. "*Ahimsa Parmo Dharam*" is not just preached but zealously followed and practised by Jains in day-to-day life.

Jainism further recognizes seven sins: (1) Gambling (2) Consumption of Non-Vegetarian Food (3) Consumption of Alcohol (4) Prostitution (5) Hunting (6) Theft / Stealing (7) Immoral Relationships. All these sins are strictly prohibited in Jainism especially in and around religious pilgrimages.

Unfortunately, in the past couple of years, under the misguided zeal to promote *Sammed Shikhar Ji*, successive Governments have completely overlooked the basic tenets of Jainism, the religious sanctity and purity of *Sammed Shikhar Ji* and the sentiments of Jains. As a result, *Sammed Shikhar Ji* is being mistakenly promoted as a tourist place. This promotion is like an abomination for Jains. As a result, several unwantanted activities have been frequently happening at

महामंत्री कार्यालय: द्वितीय तल, ईतवारा, कस्तूरबा गांधी चौक, सीपी टैंक, मुंबई - 400004 (भारत)
Secretary General's Office: 2nd Floor, Kasturba Gandhi Chowk, CP Tank, Mumbai - 40004 (Bharat)
आधिकारिक जालस्थल Official Website: www.tirthkshetracommittee.com

कमेटी द्वारा ये 20 जैन तीर्थों और अन्य कई तीर्थ ओड़ीसा प्रान्त तीर्थ "श्री सम्मेद शिखर" को पर्यटन स्थल बना जैन समाज का एक बड़ा दोलित कर और पर्यटकों चित्त व मानुष को अपने मौलिक जैन में दुखित कर यहाँ पर संदिग्ध व्यवसायिक गतिविधियों व पर्यटन पर्यटन की अनुमति देकर संवेदना जैन तीर्थ की स्थापित पवित्रता, अहिंसा और पवित्रता भंग करने वाली यह अधिसूचना तुरंत रद्द करें...

रजिस्टर्ड नं. डी. एल.-33004/99 REGD. NO. D. L.-33004/99 विष्णु जैन संपादक 9312278313

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)
प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 2345] नई दिल्ली, सोमवार, अगस्त 5, 2019/श्रावण 14, 1941
No. 2345] NEW DELHI, MONDAY, AUGUST 5, 2019/SHRAVANA 14, 1941

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 2 अगस्त, 2019

का.आ. 2705(अ).—जहाँ अधिसूचना भारत के राजपत्र, असाधारण में भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की अधिसूचना सं. का.आ. 2165 (अ), तारीख 21 फरवरी, 2018 द्वारा प्रकाशित की गई थी जिसमें ऐसे सभी व्यक्तियों से, जिनसे उससे प्रभावित होने की संभावना थी, उस तारीख से, जिसको उक्त अधिसूचना को अन्तर्विष्ट करने वाले राजपत्र की प्रतियां जनता को उपलब्ध करा दी गई थीं, साठ दिन की अवधि के भीतर आक्षेप और सुझाव आमंत्रित किए गए थे;

और, उक्त प्रारूप अधिसूचना को अन्तर्विष्ट करने वाली राजपत्र की प्रतियां जनता को तारीख 26 फरवरी, 2018 को उपलब्ध करा दी गई थीं;

और, उक्त प्रारूप अधिसूचना के प्रत्युत्तर में व्यक्तियों और एसोसिएशनों से प्राप्त आक्षेपों और सुझावों पर मंत्रालय ने विचार किया गया था;

और, पारसनाथ कनकीय अभयारण्य निर्देशांक जिले के अक्षांश पूर्वी भाग में 23°55' से 24°20' उत्तरी [illegible] अक्षांशों पर झारखंड राज्य में स्थित है, इस संरक्षित क्षेत्र के स्थानीय लोगों की आय [illegible] पारसनाथ अभयारण्य समृद्ध वन संसाधनों और प्रसिद्ध जैन तीर्थयात्रा के कारण पर्यटन का प्रसिद्ध है; इस अभयारण्य का एक भाग जैन धर्म का "पवित्रतम स्थान" माना जाता है; तुलिया वन में यही सबसे ये जैन तीर्थ यात्री यहां निर्धारित मार्ग से आते हैं; दोनों अभयारण्यों का पारिस्थितिक महत्व है और वे कमजोर अनुसंधान और शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण संसाधन उपलब्ध कराते हैं और इसमें संरक्षण गतिविधियों-पर्यटन में बढ़त करने की काफी क्षमता है;

AND WHEREAS, the protected areas has diverse type of forest like, central Indian sub-tropical hill forest beyond 1200 meters altitude, northern Indian moist Deciduous forest moist and Dry peninsular Sal Forest and northern Dry mixed deciduous forest & forest fringe and are an excellent habitat for classification and protection of mammalian fauna, birds etc. The Protected Areas supports the local population by providing them with means of livelihood in the form of cottage industry based on tourism and influx of tourist as pilgrimage. Parasnath Sanctuary represents an ideal combination of rich forest resources and a famous Jain Pilgrimage. A part of this Sanctuary is considered as the "Sanctum Sanctorum" of the Jain faith. A large numbers of Jain Pilgrims from across the globe regularly visit the place. Both the Sanctuary has great aesthetic value and scope for wildlife research and education and has tremendous potential to support that ring eco-tourism;

भारत सरकार द्वारा जारी गजट अधिसूचना

जैन समाज का एक प्रतिनिधि मंडल 16 दिसम्बर 2022 को सम्मेदशिखर जी वार्ता सम्बन्धी दिल्ली संसद भवन में स्पीकर महोदय श्री ओम बिरला से मिला। जिसने जैन समाज की ओर से सरकार के समक्ष अपनी बात रखी।

उपरोक्त विषय में जानकारी प्राप्त करने हेतु सम्बंधित केंन्द्रीय मंत्रियों के सीनियर अधिकारीयों को उपस्थित रखते हुए हमारे प्रतिनिधिमंडल ने संसद भवन दिल्ली में स्पीकर महोदय श्री ओम बिरला जी से भेंट की। बिरला महोदय जी ने दो घंटे से भी अधिक समय देकर प्रतिनिधि मण्डल की मांगों को धीरज पूर्वक और शांति से सुना।

प्रतिनिधि मण्डल में **श्री शिखरचंद पहाड़िया, राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्री संतोष जैन पेंढारी, राष्ट्रीय महामंत्री, भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, श्री गजराज गंगवाल जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष, महासभा; श्री मनिंद्र जैन जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्री ताराचंद जैन, अध्यक्ष, धार्मिक न्यास बोर्ड, महासमिति श्री सुधांशु कासलीवाल जी, अध्यक्ष, श्री महावीर जी तीर्थ क्षेत्र,** श्री **अशोक सेठी, कार्याध्यक्ष, कर्नाटक महासभा, श्री हसमुख जैन गांधी, महामंत्री, शाश्वत तीर्थ सम्मेद शिखर, श्री कमल जैन, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, श्री दिगंबर जैन ग्लोबल महासभा, श्री नवीन जैन, महापौर आगर, श्री राकेश जैन जी, अध्यक्ष, समग्र जैन महासभा समाज, श्री विनोद जैन, महामंत्री, समग्र जैन समाज, श्री प्रकाश मोदी, जैनसभा, अध्यक्ष, छत्तीसगढ़, श्री प्रमोद पहाड़िया, कार्याध्यक्ष, श्रमण संस्कृति संस्थान, श्री शांति जैन, अध्यक्ष, अतिशय क्षेत्र गोलाकोट, श्री सुशील जैन जी, संरक्षक, भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासमिति, श्री अखिल कुमार जैन, प्रकाश भवन सम्मेद शिखर, श्री एमपी अजमेरा जी, सेवानिवृत्त जिलाधीश, श्री निर्मल सोनी, सदस्य, राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा परिषद, पदमश्री श्री विमल कुमार जैन, श्री विवेक काला जी, पूर्व अध्यक्ष, दिगंबर जैन महासमिति, श्री शैलेंद्र गोधा, समाचार जगत, श्री भव्य जैन, पारस चैनल, श्री प्रवीन जैन, सांध्य महालक्ष्मी, सिटी संपादक, श्री राकेश चपलमन, राष्ट्रीय मंत्री, जैन पत्रकार संघ, श्री सचिन जैन, उद्योगपति, श्री शरद जैन चैनल महालक्ष्मी, श्री विनोद चोपड़ा, उपाध्यक्ष, गुड़गांव तीर्थक्षेत्र, उपस्थित रहे।**

जैन दानवीर तथा राज्य सभा सांसद श्री डी. वीरेंद्र हेगड़े जी केन्द्रीय पर्यटन सांस्कृतिक मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी जी से शिखरजी के मुद्दे पर मिले

देश भर में पारसनाथ पर्वत, श्री सम्मेदशिखर बचाओ आंदोलन

विश्व जैन संगठन के आह्वान पर, सम्मेद शिखर (पारसनाथ पर्वत, गिरडीह, झारखंड) बचाओ आंदोलन देश भर में आरंभ हुआ। देश के कई भागों में प्रदर्शन और रेलियां हुईं। 11 दिसंबर को दिल्ली के रामलीला मैदान में दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड , हरियाणा, पंजाब, राजस्थान और अन्य राज्यों से एकत्र हुए अपार जनसमूह ने भारत सरकार के केंद्रीय वन मंत्रालय द्वारा जारी अधिसूचना को निरस्त करने की मांग की। आचार्य अनेकांत सागर जी महाराज जी के सानिध्य में, मुनि योग भूषण , पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रदीप जैन आदित्य, सांसद नव कुमार सरानिया (आसाम), सांसद जय प्रकाश अग्रवाल, श्री निर्मल जैन, पूर्व मेयर दिल्ली, श्री चक्रेश जैन, श्री स्वदेश भूषण जैन, कांग्रेस नेता, मध्यप्रदेश प्रभारी, जे पी अग्रवाल, आदि ने सभा को संबोधित किया। इस सभा को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने पारसनाथ पर्वतराज, सम्मेद शिखर जी को वन्य जीव अभ्यारण्य का एक भाग घोषित करने वाली केंद्र सरकार की अगस्त 2019 में जारी अधिसूचना को सर्वोच्च जैन तीर्थ की पवित्रता और स्वतंत्र पहचान के लिए बहुत बड़ा खतरा बताते हुए इस अधिसूचना को निरस्त करने के साथ साथ सम्पूर्ण श्री सम्मेद शिखर जी क्षेत्र और मधुबन को मांस – मदिरा मुक्त पवित्र जैन तीर्थस्थल घोषित करने की मांग की। इसके अलावा जैन समाज ने

मांग की कि इन स्थानों को जैन समाज के लिए आरक्षित किया जाए और यहां किसी प्रकार की माइनिंग न हो, और पर्वतराज वंदना मार्ग में सीआपीएफ, स्कैनर, सीसीटीवी कैमरे सहित चैकपोस्ट, चिकित्सा सुविधाएं दी जाएं। आंदोलन की जानकारी देते हुए सभा का संचालन विश्व जैन संगठन के अध्यक्ष श्री संजय जैन ने किया। उन्होंने बताया कि यह पहाड़ जैन समाज का पवित्र धार्मिक स्थल है। पर्यटक स्थल घोषित करते ही यहां पर पर्यटकों की भीड़ में मांस और शराब के सेवन का चलन बढ़ेगा, इससे धार्मिक स्थल की पवित्रता प्रभावित होगी।

श्री सम्मेद शिखरजी बचाओ आंदोलन में दिल्ली के रामलीला मैदान के साथ साथ पूरे भारत में जगह जगह प्रदर्शन हुए। इंदौर में जुलूस निकाला गया। राजस्थान के बांसवाड़ा जिले में जैन समाज के लोगों का बड़ा प्रदर्शन हुआ ।हजारों की संख्या में लोग एकत्र हुए और नारेबाजी करते हुए रैली निकाली। धार में जैन समाज ने मौन जुलूस निकाला गया।

उदयपुर (राज.) में "श्री सम्मेद शिखर जी बचाओ आंदोलन" के समर्थन में सकल जैन समाज द्वारा जिला कलेक्टर को ज्ञापन दिए । बिजोलिया (राज.) में भी आंदोलन के समर्थन में सकल जैन समाज द्वारा विशाल रैली व ज्ञापन दिए । दाहोद (गुजरात) में सकल जैन समाज ने एकजुटता के साथ मिलकर विशाल रैली के माध्यम से ज्ञापन सौंपा।

गया, भिण्ड, ललितपुर , उज्जैन , सागर , नृप , रावतभाटा , खंडवा , बड़वानी, भानपुर , बिजोलिया, दमोह, बेंगू , मंदसौर, बनखेड़ी, झाबुआ, नीमच और अन्य शहरों में लाखो की संख्या में जैन समाज ने अपना रोष प्रकट कर अपनी मांग केंद्र सरकार और झारखण्ड सरकार से रखी। जैन समाज की प्रमुख मांग है कि अधिसूचना को निरस्त कर जैन समाज के सर्वोच्च तीर्थ श्री सम्मेद शिखर जी को सरकार अविलंब पवित्र जैन तीर्थ घोषित करे। जैन समाज के प्रतिनिधियों ने राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, केंद्रीय मंत्रियों और झारखंड के मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन भी दिए।

प्रदुमन जैन के नेतृत्व में राजेश जैन 'पुष्पांजलि', संजय जैन, यश जैन, विकास जैन, नीरज जैन ने केंद्रीय पशुपालन राज्य मंत्री डॉ संजीव वालियान (सांसद - मुजफ्फरनगर, उ. प्र.) से और गजराज गंगवाल जी के

नेतृत्व में केंद्रीय वन मंत्री श्री भूपेंद्र यादव जी से गजट के विषय में समाज का विरोध भी जताया गया है।

जैन समाज के महत्वपूर्ण तीर्थ सम्मेद शिखर के विषय में जारी अधिसूचना को लेकर समस्त जैन समाज में अत्यंत पीड़ा और नाराजगी है। उनका कहना है कि इस अधिसूचना को वापस नहीं लिया गया और श्री सम्मेद शिखर जी को पवित्र जैन तीर्थ घोषित नहीं किया गया तो समाज लगातार और भी विशाल आंदोलन करेगा।

... स्वराज जैन (टाइम्स)

भारत सरकार के पर्यटन मंत्री द्वारा अकारण ही पर्यटन केन्द्र घोषित करने से पुण्य तीर्थराज की पावनता को खतरा पैदा होने के कारण सम्पूर्ण देश में शिखर जी तीर्थ बचाओ आन्दोलन द्वारा विरोध प्रदर्शन किया गया। मध्यप्रदेश की जैन समाज ने अपना रोष व्यक्त करते हुये, प्रमुख जैन प्रतिनिधियों ने 11 दिसम्बर को राज्यपाल म.प्र. को अपना ज्ञापन सौंपा। वरिष्ठ साहित्यकार पद्म श्री डॉ.कैलाश मड़बैया अध्यक्ष अनेकान्त ऐकडमी के नेतृत्व में, श्री मनोज जैन बॉगा अध्यक्ष चौक जिनालय, श्री अमर जैन अध्यक्ष टीन सैड जैन मंदिर,राजेन्द्र जैन एवं अन्य मंदिरों के अध्यक्ष आदि अनेकानेक समाज के 31प्रतिष्ठितजन राजभवन में एकत्रित हुये। राज्यपाल की अनुपस्थिति के कारण ज्ञापन राजभवन के प्रतिनिधि अधिकारी श्री अनिल जी ने स्वीकार किया।

इंदौर में सम्मेदशिखर जी जारी आदेश के विरोध में शांतिप्रिय विरोध प्रदर्शन

सम्मेदशिखरके विरोध में दिगंबर व श्वेतांबर जैन समाज के धर्मावलंबी बड़ी संख्या में राजवाड़ा पर एकत्रित हो कर मौन जुलूस के रूप में रीगल चौराहा गांधी प्रतिमा पर पहुंचे। जुलूस में महिलाएं केशरिया वस्त्र व पुरुष श्वेत वस्त्र धारण कर शामिल हुए। 'आस्था पर कुठाराघात , नहीं सहेगा जैन समाज', 'शिखरजी को पर्यटक स्थल घोषित करने का निर्णय वापस लो' जैसे नारों की तख्तियां हाथों में उठाए महिलाएं व पुरुष चल रहे थे।

सनावद-- झारखंड के गिरिडीह जिला में स्थित श्री पारसनाथ पर्वत राज पर जैन धर्म अनुयायियों क़ा प्रसिद्ध पावन सिद्ध क्षेत्र सम्मेद शिखर जी के नाम से प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र से 20 तीर्थंकरों तथा असंख्य मुनिराजो ने समय समय पर तपस्या कर कर्मों का नाश कर मोक्ष निर्वाण प्राप्त किया है अतः यह क्षेत्र प्रमुख निर्माण क्षेत्र भी है। जैन एवं जैनेतर श्रद्धालु प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में यहाँ आकर पूजा अर्चना कर अपने को धन्य मानते हैं। जैन पौराणिक ग्रंथों में लिखा है कि यदि मनुष्य एक बार भाव सहित इस तीर्थ की वंदना कर लेता है तो वह पशु गति में जन्म नहीं लेता है तथा मनुष्य को मोक्ष की या उत्तम गति की प्राप्ति संभव है।

इस तीर्थ की महत्ता और जैन अनुयायियों की श्रद्धा एवं भक्ति को देखते हुए हजारों वर्षों से यह तीर्थ पवित्र घोषित रहा है। इस क्षेत्र पर मदिरा मांस की बिक्री प्रतिबंधित तथा पशु हत्या का निषेध है लेकिन झारखंड सरकार द्वारा विगत दिनों इस क्षेत्र को केंद्र सरकार की स्वीकृति के बाद पर्यटन क्षेत्र घोषित किया जिसे लेकर जैन समाज द्वारा देशभर में विरोध प्रकट किया जा रहा है।

उपरोक्त जानकारी देते हुए समाज के डॉ. नरेन्द्र जैन भारती एवं गजेंद्र बाकलीवाल ने बताया कि गुरुवार को सम्पूर्ण जैन समाज द्वारा आक्रोश व्यक्त करते हुए श्री पारसनाथ दिगंबर जैन बड़ा मंदिर जी से विशाल जुलूस निकाला गया जो एमजी रोड,पीपल चौक, भवानी मार्ग, मोरटक्का चौराहा, बस स्टैंड होते हुए पुलिस थाने पहुंचा जहां तहसीलदार महोदय को माननीय राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, केंद्रीय पर्यटनमंत्री तथा झारखंड राज्य के मुख्यमंत्री के नाम प्रेषित ज्ञापन सौंपे। जिसमें इस क्षेत्र को पर्यटन स्थल बनाए जाने का विरोध करते हुए 2 अगस्त 2019 की अधिसूचना को शीघ्र निरस्त किए जाने की मांग की। ज्ञापन समाज अध्यक्ष मनोज जैन सौपा। वाचन सुनील जैन ने किया। जुलूस में समाज जन नारे लगा रहे थे शाश्वत तीर्थ सम्मेद शिखर हमारा है हमारा है, शासन तेरी तानाशाही नहीं चलेगी नहीं चलेगी। पर्यटन स्थल की अधिसूचना वापस लो, नगर वासियों को रैली के निकालने के उद्देश्यों से डॉ नरेंद्र जैन भारती सुनील जैन,आदित्य पंचोलिया प्रदीप पंचोलिया,प्रशांत जैन आदि ने अवगत कराया। इस मौके पर आकाश डोसी,संतोष बाकलीवाल, नरेन्द्र पटेल, जनीश जैन, अक्षय जैन,आशीष झांजरी,गजेंद्र बाकलीवाल,नरेश पाटनी,राजेश जैन,अंकित जैन, ऋषि बंसल तथा सैकड़ों स्त्री-पुरुष तथा पत्रकार मौजूद थे।

रैली में सैकड़ों स्त्री पुरुषों के साथ बच्चे भी मौजूद थे।

जैन समाज की प्रमुख मांगे

1. इस क्षेत्र के धार्मिक स्वरूप को पूर्व की तरह बरकरार रखा जाए।
2. मांस मदिरा की दुकानों पर प्रतिबंध लगे।
3. संपूर्ण क्षेत्र को पूर्व की भांति अभयारण्य घोषित किया जाए ताकि पशु वध पर रोक बरकरार रहे।
4. पर्वतराज पर अवैध खनन रोका जाये।
5. वंदना के मार्ग से अतिक्रमण हटाया जाए।

केंद्रीय दल ने स्वर्णभद्रकूट पर साधनारत अंतर्मना गुरुदेव के किए दर्शन और लिया मार्गदर्शन

शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर पर्वत के संरक्षण, संवर्धन एवं वन्य प्राणियों की सुरक्षा के लिए दिल्ली से आये केंद्रीय दल के श्री संजय के. श्रीवास्तव IFS - Former PCCE तमिलनाडु, Dr. विभु प्रकाश जी वैज्ञानिक फोरेस्ट पंचकुला, Dr. एम. जितराम जी प्रोफेसर डिपार्टमेंट ऑफ़ फोरेस्ट, Dr. अमित कुमार जी वैज्ञानिक वाइल्ड लाइफ इंस्टिट्यूट ऑफ़ इण्डिया व स्थानीय फोरेस्ट अधिकारियों ने किया पहाड़ का निरिक्षण और अंतर्मना गुरुदेव से भेंट कर आशीर्वाद लिया और विभिन्न बिन्दुओं पर चर्चा करते हुए लिया मार्गदर्शन।

'अन्तर्मना गुरुदेव 557 दिन की अखण्ड मौन साधना व्रत में रत है,' इसलिए अन्तर्मना केन्द्र सरकार से आये सभी सदस्यों को तीर्थ राज सम्मेद शिखर पर्वत के संरक्षण, सम्वर्धन, सादगी, स्वच्छता, और पर्वत की पवित्रता के लिए विशेष रूप से यह निर्देशित किया कि यह पहाड़ सम्पूर्ण जैन समाज की धड़कन है, श्रद्धा विश्वास और आस्था का केंद्र है। यदि इसकी पवित्रता के साथ, सरकार खिलवाड़ करती है तो जैन समाज को बहुत चोट पहुंचती है। अतः इसके मूलभूत सुविधाएं अस्तित्व के साथ कोई भी परिवर्तन नहीं होना चाहिए। 'इस तीर्थराज पर्वत को पर्यटन नहीं, तीर्थ की पवित्रता पर ध्यान देने की आवश्यकता है।' जैसे वैष्णो देवी, काशी, अयोध्या, मथुरा वृन्दावन तीर्थ है उसी प्रकार शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर पर्वत भी पवित्र धर्म तीर्थराज है।

भारत देश के विभिन्न प्रान्तों की दिगम्बर जैन समाज ने अपने अपने प्रतिष्ठान बंद कर शिखर जी पर्यटन स्थल के विरोध में निकाला जुलूस

सम्मेदशिखर जी को पर्यटन स्थल घोषित किये जाने के विरोध में सम्पूर्ण जैन समाज की भावनाओं को ठेस पहुंची है। जिसे सम्पूर्ण जैन समाज ने सड़कों पर आकर अपना रोष प्रदर्शित किया। भारत के विभिन्न राज्यों मध्यप्रदेश के इंदौर, उज्जैन, भोपाल, रीवा, सतना, सागर, ग्वालियर, नरसिंहपुर, जबलपुर उत्तरप्रदेश के लखनऊ, ललितपुर, झाँसी, राजस्थान, कोटा, महाराष्ट्र, सोलापुर, औरंगाबाद इत्यादि अनेकों छोटे बड़े प्रान्तों की जैन समाज ने २१ दिसम्बर २०२२ को अपने प्रतिष्ठान दुकान व्यापार आदि बंद करके जुलूस निकाल कर सरकार के प्रति घोर विरोध प्रदर्शित किया। छोटे बड़े सभी दूकानदारों ने अपने दुकान के बाहर पोस्टर लगाकर अपना प्रतिष्ठान बंद रखने का आह्वान किया। सम्मेदशिखर जी के इस आन्दोलन में समाज के वयस्क, युवा, महिलाएं एवं बच्चे शामिल हुए। जैनों के इस आन्दोलन में अजैनों ने भी जैन समाज का समर्थन किया और सम्मेदशिखर जी को पर्यटन स्थल नहीं पवित्र तीर्थक्षेत्र घोषित करने की मांग की।

देश भर में शिखर जी पर्यटन स्थल घोषणा के विरोध में प्रदर्शन की झलकियाँ

देश भर में शिखर जी पर्यटन स्थल घोषणा के विरोध में प्रदर्शन की झलकियाँ

सम्मेदशिखर जी को पर्यटन स्थल घोषित किये जाने के विरोध में राजस्थान कोटा में उमड़ा जन सैलाब, निकाला गया मौन जुलूस

देश भर में शिखर जी पर्यटन स्थल के विरोध प्रदर्शन की झलकियाँ

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/ 2022-24
Jain Tirth vandana, English-Hindi December 2022
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/ 2022-24
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GFL

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

INOX

GROUP OF COMPANIES

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

Printed and Published by UMANATH RAMAJOR DUBEY on behalf of BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Printed at TRIMURTI PRINTERS, 5/7 DADARKAR BUILDING, V P ROAD, C P TANK, MUMBAI-400 004 and Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, HIRA BAUG, 2ND FLOOR, C P TANK, MUMBAI-400 004. Editor : UMANATH RAMAJOR DUBEY